वेदों की ओर लौटो...!

॥ ओ३म् ॥

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु कार्यतत्पर
सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

वर्ष १६ अंक २ फरवरी २०१६

युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द

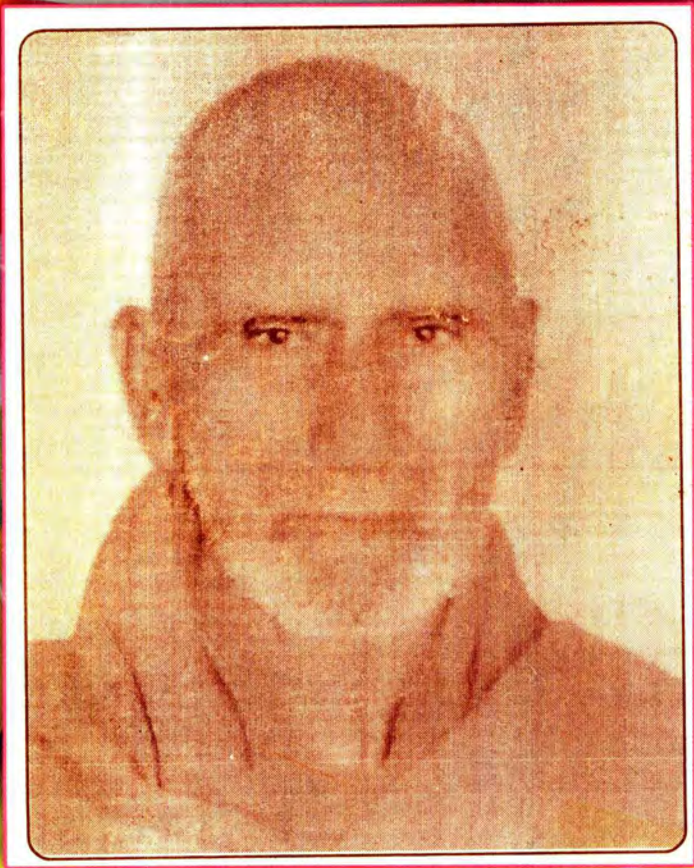

आर्य जगत् के तपस्वी, धर्मात्मा, गोभक्त, कर्मयोगी विद्वान्
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान
स्व.पूज्य आचार्य बलदेवजी को भावपूर्ण श्रद्धांजलि !

मुम्बई के पवई विभाग में सौ.पल्लवी समीर आमटे द्वारा आयोजित विशेष पारिवारिक सत्संग में मौलिक मार्गदर्शन करते हुए परोपकारिणी सभा के प्रधान प्रो.डॉ.धर्मवीरजी ।

परली में नवनिर्मित यज्ञशाला के उद्घाटन समारोह में सम्बोधित करते हुए श्री लोहियाजी । मंचपर हैं पं.सन्दीपजी वैदिक, चंदुलालजी बियाणी, माधवराव देशपांडे,डॉ.ब्रह्ममुनिजी आदि ।

नवनिर्मित यज्ञशाला का उद्घाटन करते हुए मान्यवर विद्वान्, पदाधिकारी व दोडिया परिवार के सदस्य ।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का

मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११६ कलि संवत् ५११६ विक्रम संवत् २०७२

दयानन्दाब्द १९१ माघ फरवरी २०१६

प्रधान सम्पादक	मार्गदर्शक सम्पादक	सम्पादक
माधव के. देशपांडे	डॉ.ब्रह्ममुनि	डॉ.नयनकुमार आचार्य
(९८२२२९५५४५)	(९४२१९५११०४)	(९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक - प्रो.देवदत्त तुंगार, प्रो.ओमप्रकाश होलीकर

प्रा. सत्यकाम पाठक, ज्ञानकुमार आर्य

अनुक्रम

हिन्दी विभाग

१) आर्यों के तपोधन पू. आचार्य बलदेवजी (सम्पादकीय)..........४

२) अग्निहोत्रीय चिकित्सा का महत्व व लाभ ६

३) ज्येष्ठ आर्यसेवकों का गौरव क्यों और कैसे ?...........१२

४) अदम्य साहस की प्रतिमूर्ति लेखराजजी आर्य..............१५

५) आर्य समाजों को सूचनाएं...१७

६) समाचार दर्पण...१९

७) आचार्य बलदेवजी का परलोकगमन.............................२०

८) सभा उपक्रम..२२

मराठी विभाग

१) उपनिषद संदेश/दयानंदांची अमृतवाणी..........................२३

२) आर्यजनहो ! फटाके नकोत, यज्ञ करा.........................२४

३) वैदिक व्याख्यानमाला-वृत्तांत....................................२८

४) 'ते स्वामी दयानंद' आर्य समाजी नाहीत !.....................३१

५) वार्ता विशेष...३३

६) शोकवार्ता..३४

• प्रकाशक •
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज
परली-वैजनाथ ४३१५१५

• मुद्रक •
वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज,परळी-वै.

-वैदिक गर्जना के शुल्क-
वार्षिक - रू. १००/-
आजीवन रू. १०००/-

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होगा।

सम्पादकीयम्

आर्यों के तपोधन पू. आचार्य बलदेवजी

संस्था या संगठन के उत्थान व विकास के मूल में व्यक्ति का समर्पण, तप व त्याग बहुत ही काम आता है। सम्पूर्ण समाज को वैचारिक दृष्टि से सुविकसित कर उसे यशोशिखर पर पहुंचाने में भी उसका सर्वाधिक योगदान महत्वपूर्ण माना जाता है। वे दिव्यात्मरश्मियां ही अन्यों को चमकाने का सामर्थ्य रखती है, जो कि इतिहास का स्वर्णिम पृष्ठ बन जाती हैं। आर्य जगत् की तपोनिधि व दिव्य व्यक्तित्व पूज्य आचार्य बलदेवजी एक है इतिहासपुरूष सिद्ध हुए, जिन्होंने आर्य समाज में नवचेतना का संचार किया। वैदिक विचारधारा, गुरूकुलीय शिक्षाप्रणाली, गौसेवा व गौसंवर्धन तथा समाजसुधार के आन्दोलनों आदि को यशस्वी नेतृत्व प्रदान करने में कर्मयोगी आचार्य बलदेवजी सफल रहें हैं

अध्यापक, आचार्य व विद्वान को परमात्मा का प्रतिनिधि माना जाता है, क्योंकि जैसे ईश्वर अपनी प्रेरक शक्तियों द्वारा संसार की हर एक वस्तु का निर्माण करता है, उसी तरह एक आचार्य भी माता-पिता के पश्चात् सुसंस्कारों द्वारा बच्चों के नवसृजन का सबसे बडा कार्य पूरी शक्ति के साथ करता है। इस दृष्टि से आचार्य बलदेवजी अपने आचार्यत्व की कसौटी पर पूर्णतया खरे उतरे हैं। वेदों में एक स्थान पर आया है - **'इन्धानास्त्वां शतं हिमाः द्युमन्तं समिधीमहि।'** अर्थात् हे यज्ञाग्नि ! जलते हुए हम लोग तुझ प्रकाशयुक्त को जलाएं। यज्ञ की अग्नि जलानेवालों का जीवन भी अग्निसमान जलनेवाला होना चाहिए। बुझी हुई अग्नियां दूसरों को कदापि प्रज्वलित कर नहीं सकती। कुछ लोग घृत, सामग्री, समिधादि द्वारा भौतिक (बाहरी) यज्ञाग्नि जला तो सकते हैं, किंतु आध्यात्मिक (आन्तरिक) अग्नि जलाना उनके बस की बात नहीं होती। पू. आचार्य बलदेवजी जहां भौतिक यज्ञाग्नि को प्रज्वलित किये बिना भोजन तक गृहण नहीं करते थे, वहीं वे आध्यात्मिक यज्ञाग्नि को प्रज्वलित करनेवाले वे एक महान याज्ञिक सन्त भी सिद्ध हुए। तभी तो **'अग्निना अग्नि समिध्यते।'** इस वेदोक्ति के अनुसार उनके दैदीप्यमान जीवन से प्रेरणा पाकर अनेकों अग्नियां जल उठी! फलस्वरूप आर्य जगत् मे आर्य विद्वानों, आचार्यों एक शृंखला सी बन गई। उनके नेतृत्व में किये गये आन्दोलन सफल हुए। उनकी एक आवाज पर हजारों आर्ययुवक व नागरिक आगे आते रहें। फिर वह गौरक्षा आन्दोलन हो, या पाखण्डी बाबा रामपाल जैसे दुष्ट पापी के विरोध में चलाया गया आन्दोलन हो ! इनकी सफलता का सारा श्रेय आचार्य बलदेवजी को ही जाता है। पू.

आचार्यजी की यह विशेषता रही है कि वे बोलते बहुत कम थे । भाषणबाजी उनके स्वभाव से बाहर थी । उनका सरल, सादगीपूर्ण, तपस्यामय, समर्पित उच्च कर्मशील जीवन शब्दाभिव्यक्ति से परे था ।

प्रायः देखा जाता है कि इस समय गुरूकुलों में वेद, संस्कृत, व्याकरण आदि के पठन-पाठन की प्रक्रिया तो चल रही हैं, इनमें कम-अधिक सुयोग्य स्नातक भी निकलते हैं । इनमें से अधिकतर सरकारी स्कूल व कॉलेजों में अध्यापक बनकर धनार्जन व केवल घर- गृहस्थी के कामों व्यस्त रहते देखे जाते हैं । उनके जीवन में वैदिक सिद्धान्तों का अभाव व आर्य समाज के प्रति योगदान की भावना विशेष नही दिखाई देती हैं । इसका कारण उन आचार्यों व अध्यापकों में भी ढूंढा जा सकता है ।

गुरूकुल झज्जर हो या गुरूकुल कालवा ! आचार्य बलदेवजी ने वहां पर अपने प्रतिभाशाली अध्यापन कौशल्य व तपस्वी जीवन से ब्रह्मचारियों को जागृत किया । उनका सान्निध्य पाकर अनेकों युवक वेद व व्याकरण महाभाष्य अद्वितीय विद्वान् तो बने ही, साथ ही सामाजिक व राष्ट्रीय कार्यों में योगदान देनेवाले उच्च कोटि के नेता भी बनें । अनेकों गुरूकुलों का संचालन करनेवाले आचार्य – संन्यासियों का निर्माण भी बलदेवजी के कारण हुआ ।

इसी के साथ वैदिक धर्म के प्रचार व प्रसार हेतु समय देनेवाले मिशनरी भी तैयार हुए । आचार्यजी की अनूठी तपस्या यहां तक रंग लायी कि योग, आयुर्वेद व भारतीय वैदिक संस्कृति को सारे विश्व में पुनः प्रतिष्ठित करानेवाले स्वामी रामदेवजी जैसे आधुनिक युगपुरूष भी संसार को मिले । आचार्यजी के प्रमुख शिष्यों में स्वामी विवेकानंदजी (प्रभात आश्रम, टीकरी), स्वामी प्रणवानन्दजी सरस्वती (दिल्ली), स्वामी दिव्यानंदजी (हरिद्वार), आचार्य विजयपालजी (गुरूकुल झज्जर), आचार्य दयानन्द (कितलाना), स्वामी चन्द्रवेशजी (टिटौली), आचार्य डॉ. देवव्रतजी, डॉ. योगदानंदजी शास्त्री (दिल्ली), गुरूकुल कांगडी वि.वि. के कुलपति डॉ. सुरेंद्रकुमारजी, परोपकारिणी सभा के प्रधान डॉ. धर्मवीरजी (अजमेर), विरजानंदजी दैवकरणि, आचार्य विश्वपाल (दाधिया), डॉ. यज्ञवीरजी दहिया (रोहतक), स्वामी रामवेश, डॉ. सतीशजी आर्य (अमेरिका), डॉ. रघुवीरजी वेदालंकार, आचार्य अखिलेशश्वरजी आदियों का गौरवपूर्वक उल्लेख किया जाता है । हरियाणा व सार्वदेशिक सभा के प्रधानपद को सुशोभित करनेवाले ऐसे कर्मनिष्ठ, साहसी, वीतरागी, वेदानुगामी, धर्मात्मा पू.आचार्य बलदेवजी को शतशः सादर अभिवादन !

–डॉ.नयनकुमार आचार्य

(गताङ्क से आगे)

अग्निहोत्रीय चिकित्सा का महत्व व लाभ

– डॉ.प्रद्युम्नकुमार शास्त्री

अग्निहोत्रीय चिकित्सा के क्रम में मात्र आग जला देना और उसमें सुंगधित सामग्री को होम देना ही यज्ञ नहीं होता, क्योंकि यज्ञ का प्रयोजन मात्र वायु को शुद्ध करना ही नहीं है। यदि ऐसा ही होता तो उनमें मन्त्रोच्चारण एवं सतर्कता पूर्वक किये जानेवाले विधि–विधानों तथा अनुबंधों को उसके साथ नहीं जोडा गया होता। वस्तुत: यज्ञ प्रक्रिया के अंतर्गत उन सभी विधि–विधानों का परस्पर सामंजस्य है। तभी तो हमारे पूर्वज ऋषि–मुनि मन्त्रोच्चारण पूर्वक विधि–विधान के साथ द्रव्य विशेष की आहुति यज्ञाग्नि में देकर दिव्य शक्ति उत्पन्न करके अपने तथा दूसरों के मनोरथों को पूर्ण करते थे। मन्त्रविद्या और यज्ञविज्ञान का परस्पर सम्बन्ध है। मन्त्र विद्या में जप अनुष्ठान आदि की महत्ता है, किन्तु उसकी पूर्णता यज्ञकृत्य द्वारा ही पूरी होती है। मात्र जप ही करता रहे और उसके साथ यज्ञ का समावेश न हो, तो इतने मात्र से अभीष्ट शक्ति का उत्पादन न होगा और लक्ष्य की पूर्ति भी नहीं होगी, क्योंकि बिना पुरुषार्थ के प्रार्थना भी सफल नहीं होती है।

विज्ञान में ताप, ध्वनि और प्रकाश को शक्ति की मूलभूत ईकाई माना गया है। मन्त्र केवल ध्वनि है, शब्द की अपेक्षा ताप और प्रकाश की गति तीव्र है। मन्त्र को व्यापक बनाने के लिए उसके साथ ताप और प्रकाश का यज्ञ के रुप में जोडना पडता है। तभी वह अधिक शक्तिशाली और विश्वव्यापी बनता है। मन्त्र शक्ति का विस्तारीकरण करने के लिए एम्प्लीफायर और ट्रांसमीटर दोनों का काम यज्ञाग्नि के द्वारा सम्पन्न होता है। यज्ञ मात्र वनौषधियों व समिधाओं के सहारे अग्नि प्रज्वलित कर जला देने की क्रिया नहीं है, किन्तु उसके साथ मन्त्रोच्चारण की अनिवार्यता भी जुडी हुई है। यज्ञ कृत्य में वेदमन्त्रों का समवेत स्वरों में उच्चारण होता है। वेदमन्त्रों में मात्र शिक्षा ही नहीं, बल्कि उनमें स्वरसंगीत का भी समावेश है। यज्ञों में उदगाता का महत्वपूर्ण पद इसलिए नियत था कि वह मन्त्रों को आवश्यकतानुसार ध्वनियों में विधिपूर्वक गान कर सके।

यज्ञाग्नि एक प्रकार से विद्युत उत्पादन केन्द्र का काम करती है। उसके साथ निर्धारित ध्वनि का समावेश हो जाने पर उत्पादित शक्ति की क्षमता एवं उपयोगिता दोनों काफी बढ जाती हैं। रेडियो प्रसार में भी यही विधा काम करती

है । अग्निहोत्र प्रक्रिया में उच्चारित वेदमन्त्रों का जितना महत्व यजन की जानेवाली औषधि, अध्वर्यु, होता, याजकगणों एवं कर्मकाण्डों का है, उससे भी अधिक गाये जानेवाले मन्त्रों का है । यज्ञ में प्रयुक्त होनेवाले सभी तत्वों में मन्त्र शक्ति सर्वोपरी है । इसलिए यज्ञ में मन्त्रों का प्रयोग पूर्ण सावधानी के साथ किया जाना उचित है ।

कर्मकाण्डों के विधान करनेवाले कल्प साहित्य में कार्यों की मर्यादा यह है कि निर्धारित कर्मकाण्ड के समाप्त हो जाने पर उसका बचा हुआ द्रव्य निर्वीर्य हो जाता है । कारण यह है कि उन पदार्थों को जिस उद्देश्य से भिन्न प्रयोजन के लिए उपयुक्त नहीं रहते । ठीक इसी प्रकार जिस यज्ञ की विशेषता जिस आचार्य से प्राप्त करनी होती है, उनके द्वारा ही वह कार्य ठीक प्रकार से सम्पन्न हो पाते हैं । महाराज दशरथ के कुलगुरु वसिष्ठ उच्च कोटि के वेदज्ञ विद्वान् थे। कोई भी क्रियाकलाप उनसे छिपा नहीं था, किन्तु पुत्रेष्टि यज्ञ के लिए उपयुक्त ऋषि श्रृंगी ही थे । प्राचीन काल में वंश परम्परा से जिस मन्त्र की साधना चलती थी । पीढी दर पीढी मे उस विशेषता को कायम रखा जाता था । ऐसी परम्परा का कालान्तर में लोप हो जाने के कारण अब एक ही पण्डित सभी प्रकार के कृत्य सम्पन्न कराते है । फिर भी जो विद्वान् जिस मन्त्र भाग के अधिकारी बनें, उन्हें उचित है कि प्रतिदिन निष्ठापूर्वक उन मन्त्रों को अपने में जागृत रखने के लिए पाठ की उपासना का क्रम जारी रखें । समस्त जीवन ही नहीं, तो कम से कम मन्त्र आराधना के समय तो तपस्वी और इन्द्रिय निग्रही रहना आवश्यक है। इसके बिना वह शक्ति उत्पन्न नहीं होती, जो अभीष्ट प्रयोजन के लिए जरुरी है । अतः यदि कोई जानकार कर्त्ता हो, तो उन पध्दतियों में से जितना सम्भव हो उतना विधि-विधान से प्रयोग कर लेंवे। यदि रोगी का लंघन हो तो तिल, जौ, चावल समुचित परिमाण के साथ सामग्री में मिलाकर अग्निहोत्र रहना चाहिए ।

यज्ञीय चिकित्सा के द्वारा मानसिक रुप अविकसित बच्चों की बुद्धि विकसित हो जाती है । इसके लिए कम से कम चार से छः माह तक नियमित रुप से प्रतिदिन यज्ञ करना अनिवार्य है । हवन कुण्ड में डाला हुआ गोघृत हमारी बुद्धियों को प्रखर व प्रबल करता है तथा मानसिक कुप्रवृत्तियों को शान्त करता है । जटामासी की आहुति से प्रज्वलित गैस हमारी कामवासनाओं को शमन करता है । चावल व जौ का धुआँ व गैस क्रोध को शान्त करता है । पेचिश के रोंगों में यज्ञ के समय हवन सामग्री में कच्चे चावल की मात्रा को बढाकर यज्ञाग्नि में आहुति देने से लाभ मिलता है । नशीली वस्तुओं से छुटकारा दिलाने के लिए कम से कम तीन माह तक यज्ञ किया

जाय। श्री गोलेच्छा ने अपने शोधपत्र **'अग्निहोत्र द ट्रीटमेंट ऑफ अल्कोलिज्म'** में लिखा है कि, अग्निहोत्र एक वैदिक कर्मकाण्ड मात्र ही नहीं बल्कि एक विज्ञान सम्मत प्रक्रिया है । यज्ञ का मानव मस्तिष्क पर **'ब्यूरो फिजियो लॉजिकल'** प्रभाव पडता है । ई.सी.वी. अध्ययनों में देखा गया है कि मानव मस्तिष्क में मिलनेवाली डेल्टा तरंगें यज्ञीय प्रभाव से कम हो जाते हैं और अल्फा तरंगें अधिक मात्रा में निकलने लगते हैं । अत: मन को शान्त और प्रसन्न बनाने में यज्ञीय ऊर्जा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है ।

'यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे' के अनुसार **'अयं यज्ञ भुवनस्य नाभि:'** (यजु.२३.६३) यह यज्ञ इस संसाररुपी शरीर का मूल केन्द्र नाभि है । सबको जोडते व प्यार-स्नेह को बढानेवाला एक आकर्षण सूत्र है। अत: वेद में यज्ञ को नाभि की संज्ञा दी गई है । जिस प्रकार प्रत्येक शरीरधारी प्राणी के अंग में बीच पर नाभि नामक मूल केन्द्र होता है और जिसके भीतरी भाग के पाचन तन्त्र से शरीर के चारों ओर की नस-नाडियाँ जुडी रहती है । इन्हीं नस-नाडियों के माध्यम से मुंह के द्वारा खाये गये भोजन सामग्री का सारतत्व पूरे शरीर में यथास्थान जाकर रस व रक्त का निर्माण करता रहता है, किन्तु जब किसी की नाभि टल जाती है, तो वह बिमार हो जाता है । इसी प्रकार गर्भस्थ शिशु का भा सर्वांगीण विकास माँ के द्वारा खाये गये भोजन सामग्री और मानसिक विचारों के साथ इसलिए होता है कि, माँ की नाभि से एक नाडी का शिरा निकलकर गर्भस्थ शिशु के नाभि से दुसरा शिरा जुडा हुआ होता है और समय पाकर वही शिशु जब प्रसव के साथ बाहर आता है, तब उसकी नाल काट दी जाती है । इसी को नाडी छेद भी कहते हैं और यही नाडी शिशु के शरीर में जनेऊ की तरह लपेटा हुआ रहता है एवं माँ और शिशु के हृदय को एक सूत्र में जोडकर रखता है । ठीक इसी प्रकार यज्ञ हवन सामग्री के विशेष सहयोग से फटे हुए दो हृदयों को आपस में जोड देती है । दूसरी बात यह है कि जिस प्रकार शरीर की नाभि टलने से व्यक्ति बिमार पड जाता है, उसी प्रकार वर्तमान समय में प्रकृतिरुपी शरीर की नाभि टल जाने के कारण आज संसार का वातावरण चारों प्रकार से दूषित हो चूका है और यह सब यज्ञ की परिपाठी को छोड देने के कारण हुआ है । अत: इस प्रकृति रुपी शरीर की नाभि, जो यज्ञ था उसको फिर ठीक करके इसे पुनर्जीवित करने के लिए उन्नीसवीं शताब्दी के महान समाजसुधारक, वेदोद्धारक, युगप्रवर्तक महर्षि दयानंद सरस्वतीजी की कृपा से प्राप्त हुए वैदिक यज्ञों को अपनाने से ही सम्भव है। क्योंकि

शतपथ ब्राह्मण (२.६.२.२) के अनुसार इस प्रकार तबाया गया-

य एष एतत्करोति याश्च त्वेवास्य प्रजा जाता याश्चाजातास्ता उभयो रुद्रियात्प्रमुंचति, अस्यानमीवा: अकिल्विषा: प्रजा: प्रजायन्ते तस्माद्वा एष एतैर्यजते ।।

यह जो सन्तान इस प्रकार का कार्य करता है और जो वह, तू इसका प्रजा उत्पन्न हुआ है और जो आगे भी उत्पन्न होगा अथवा उसी प्रकार वर्तमान जो सन्तान उत्पन्न हो रहे है, उन समस्त सन्तानों और उसके उत्पादकों को यह यज्ञ हमेशा रोगों से मुक्त रखता है । छान्दोग्योपनिषद (४.१७.१८) के अनुसार -

'भैषज कृतोह वा एष यज्ञो यत्रैवधिद् ब्रह्मा भवति ।।'

अर्थात् आरोग्य शास्त्र का ज्ञाता जिस यज्ञ का ब्रह्मा होता है उस यज्ञ को भैषज्य याग कहा गया है ।

प्राचीन काल में आरोग्यता की वृद्धि के लिए और रोग निवारण के लिए जो यज्ञ किया जाता था उसे भैषज्य याग कहते थे तथा इसका ब्रह्मा आरोग्यशास्त्र का ज्ञाता होता था। वह सूक्ष्म वैज्ञानिक परीक्षण के द्वारा यह जान लेता था कि इस समय वायुमण्डल में कौन सा विकार बढा ? जिस के कारण यह रोग विशेष फैल रहा है और उन रोगों को दूर करने के लिए किन-किन जडी-बुटियों से हवन करना चाहिए ? रोगी के शरीर में कौन सा दोष बढा हुआ है और कौन सा दोष घटा हुआ है ? तथा उन दोषों की क्षतिपूर्ति के लिए किन औषधियों की आवश्यकता है ? इन समस्त पहलुओं को ध्यान में रखकर वनौषधियों की हवन सामग्री बनवाकर उसी के अनुरुप वेदमन्त्रों से आहुतियाँ दिलवाकर आरोग्यशास्त्र के ज्ञाता हवन कराया, करते थे और रोगी यज्ञमय वातवरण में रहता था तथा यज्ञ द्वारा सुगन्धित शुद्ध जलवायु के साथ आहार-विहार करके रोग से छुटकारा पाता था । ऐसे भैषज्य यज्ञों का वर्णन अनेक ग्रन्थों में मिलता है । गोपथब्राह्मण (३.१.१९) के अनुसार-

"भैषज्य यज्ञा: वा एते यच्चातुर्मास्यानि तस्माद् ऋतुसन्धिषु प्रयुज्यन्ते । ऋतुसन्धिषु वैर्व्याधि जायते।।"

अर्थात् जो चातुर्मास याग हैं, वे भैषज्य याग कहलाते हैं, क्योंकि वे रोगों को दूर करने के लिए होते है और ये ऋतु सन्धियों में किये जाते है, क्योंकि रोग भी ऋतु सन्धियों में ही उत्पन्न होते हैं । यह बात अथर्ववेद (६.१०६.१) में भी आयी है कि, "**अग्निष्कृणोति भैषजम्।**" अर्थात् यज्ञाग्नि औषधि का भी काम करता है । इस सूक्ति के अनुसार ज्ञात होता है कि चातुर्मास यज्ञों का प्रचलन इसी कारण से परम्परागत चली आ रही है । इसक

संकेत महर्षि दयानन्द रचित सत्यार्थ प्रकाश तृतीय समुल्लास के निम्नलिखित वाक्यांश में मिलता है कि, **'आर्यवर शिरोमणि महाशय ऋषि-महर्षि, राजे-महाराजे लोग बहुत सा होम करते-कराते थे। जब तक इस होम के करने का प्रचार रहा तब तक आर्यावर्त्त देश रोगों से रहित एवं सुखों से पूरित था। अब भी प्रचार हो तो वैसा ही हो जावे।'** महर्षि के इस सन्देश को ध्यान में रखकर प्राणिमात्र के कल्याण के लिए और शारीरिक सुख की प्राप्ति कराने की कामना को स्वीकार करते हुए अग्निहोत्रीय चिकित्सा करानी चाहिए। ऐसे चिकित्सापरक यज्ञों को दैनिक हवन के साथ अपनाकर हम स्वयं सुखी होंगे और दूसरों को भी सुख पहुँचाकर पुण्य के भागी बन सकेंगें। इसके लिए हमको दिन में मात्र एक घण्टे का समय निकालना होगा जो चौबीस घण्टों के लिए शुद्ध वायु प्रदान करने में सक्षम है।

अत: किसी भी प्रकार के रोग से पूर्ण छुटकारा पाने के लिए प्राचीन ऋषि-मुनियों द्वारा बताये गये रोगानुसार निर्मित हवन सामग्री और रोंगो से सम्बन्धित मन्त्रों से प्रतिदिन प्रात: अथवा सायं अपनी सुविधानुसार दिन में कम से कम एक बार हवन अवश्य करें। साथ ही साथ हवन करते समय आहुति की मात्रा उतनी ही होनी चाहिए, जितनी की दूसरी आहुति देने से पहले भस्म हो जाय तभी यज्ञ से पूर्ण लाभ तत्काल मिलेगा।

व्यक्तिगत जीवन में शारीरिक आरोग्यता के लिए औषधि का सेवन उतना लाभदायक नहीं होता, जितना की इंजेक्शन का होता है, किन्तु इन दोनों से भी जल्दी चमत्कारी लाभ हमें यज्ञ से मिलेगा। इस प्रकार की यज्ञ चिकित्सा को अपनाने से पहले जिन औषधियों का सेवन रोग के अनुसार किया जा रहा है, कृपया उसे तत्काल बंद न करें, बल्कि दवाई खाना जारी रखें। लाभ होने पर धीरे-धीरे दवाइयाँ अपने आप बन्द हो जायेगी अर्थात् ठीक होने पर आप दवाई खाना बन्द कर देंगे। प्राय: देखा जाता है कि चिकित्सा के क्षेत्र में जब कोई रोगी कोमावस्था में अर्थात् अर्धमृतप्राय, चेष्टाविहीन, बेहोश हो जाता है, तो उसे आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के अनुसार गैस के रुप श्वास नली द्वारा पौष्टिक आहार के सारतत्व प्रदान किये जाते हैं। ठीक उसी प्रकार यज्ञ के सारतत्व हमें प्राणप्रद सर्वोत्तम रसायन में परिवर्तित होकर उत्तम जलवायु की प्राप्ति श्वास-प्रश्वास द्वारा जीवित अवस्था में ही तो जाती है और श्वांस के द्वारा यज्ञ के गैस जब शरीर में प्रवेश करते हैं, तो बिना शरीर को नुकसान पहुंचाये भीतर के कीटाणुओं को नष्ट कर बाहर निकाल देते हैं और रोगी अपने आप को हल्का व आराम का अनुभव करने

लगता है । इस प्रकार के यज्ञों को जीवन में अपनाकर व्यक्ति सुखपूर्वक जीवन बिता सकता है। इसमें किसी भी प्रकार का कोई संदेह नहीं है । अतः समय को देखते हुए यदि हम इस अग्निहोत्रीय चिकित्सा पध्दति को न अपनाये, तो वह दिन दूर नहीं जब हमें अन्तरिक्ष यात्री की तरह ऑक्सीजन का सिलैण्डर पीट में बाँधकर घूमना पडेगा ।

इसलिए सचेत किया जाता है कि आप और हम सभी अभी से सावधान हो जाये और इसे दैनिक दिनचर्या में शामिलकर स्वयं सुखी रहें और अन्य जीवन-जन्तुओं को भी सूखपूर्वक जीने की स्वतन्त्रता प्रदान कर परोपकार का कार्य करें । इसी परोपकार की भावना के साथ हवन चिकित्सा पर अनेक विद्वानों द्वारा शोध कार्य किये जा रहे हैं । इस विषय को ज्यादा विस्तार न करते हुए मात्र इतना ही कहा जा सकता है कि समय के अनुसार आधुनिक चिकित्सा के क्षेत्र में सर्वांगपूर्ण रोगों का ईलाज पूर्णतः सम्भव नहीं है, किन्तु ऐसे समस्त रोगों का निदान यज्ञ के द्वारा सम्भव है ।

– पुरोहित, आर्य समाज

रांची (झारखंण्ड)९९५५१४२३४३

लातूर का वार्षिकोत्सव व आयसेवक गौरव समारोह

एक समय वैदिक धर्म के प्रचार का तथा हैद्राबाद स्वतन्त्रता संग्राम का केन्द्र रही महाराष्ट्र की प्रसिद्ध पुरानी आर्य समाज, गान्धी चौक, लातूर की वार्षिकोत्सव आगामी दि. २५, २६ व २७ मार्च २०१६ को धूमधाम के साथ मनाया जा रहा है । जानेमाने वैदिक विद्वान् आचार्य पं. हरिशंकरजी अग्निहोत्री (आग्रा-उ.प्र.) इस अवसर पर प्रमुख व्याख्याता के रूप में आमन्त्रित हैं तथा आर्य भजनोपदेशक के रूप में श्री पं. भूपेन्द्रसिंहजी आर्य पधार रहे हैं । प्रातः यज्ञ, प्रवचन तथा आध्यात्मिक विषयों पर प्रवचन तथा रात्रि में विभिन्न राष्ट्रीय सामाजिक, धार्मिक व समसामयिक विषयोंपर व्याख्यान तथा भजन होते रहेंगें । दि. २६ मार्च को दोपहर १ बजे महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा **आर्यसेवक गौरव समारोह** का आयोजन किया गया है । समारोह की अध्यक्षता सभा के संरक्षक पू. स्वामी श्रद्धानंदजी करेंगें । प्रमुख अतिथि के रूप में जानमाने शिक्षाविद् डॉ. जनार्दनरावजी वाघमारे उपस्थित होंगें ।

अतः इस उत्सव व आर्यगौरव समारोह में आर्य जनों को पधारने का अनुरोध आर्य समाज के प्रधान एड्. हरिश्चन्द्रजी पाटिल, उपप्रधान ओमप्रकाशजी पाराशर, मन्त्री पराण्डेकर, कोषाध्यक्ष पराण्डेकर, बाबुरावजी तेरकर तथा सभा प्रधान डॉ. ब्रह्ममुनिजी, मंत्री माधवरावजी देशपांडे आदियों ने किया ।

ज्येष्ठ आर्यसेवकों का गौरव क्यों और कैसे ?

–डॉ. ब्रह्ममुनि वानप्रस्थ (प्रधान, म.आ.प्र.सभा)

जिन आर्य विभूतियों ने समाज, देश व राष्ट्र के लिये समर्पित भाव से जीवनभर कार्य किया है, उनका महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा विशेष गौरव करना चाहती है । इसके पीछे निम्न पवित्र भावनाएं व उद्देश्य हैं –

● जिन ज्येष्ठ आर्यसेवकों ने प्रतिकूल परिस्थितियों में अपना जीवन बिताया तथा राष्ट्र, समाज व देश के लिए कर्तव्य भावना से जान हथेलीपर लेकर तन-मन-धन से, त्याग, तपश्चर्या व समर्पित भाव से सबका कल्याण हो, इस उदार भावना को हृदय में संजोकर जो महनीय कार्य किये हैं, उन्हें स्मरण कर उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना, यह आर्य समाज व प्रान्तीय सभा का परम नैतिक कर्तव्य हैं तथा एक तरह से महान प्रेरक, सामाजिक व धार्मिक कार्य हैं

● उन सभी समाजसेवियों का त्याग, तप, व समर्पण संसार के सामने आये तथा आनेवाली पीढी को उनसे सतत प्रेरणा मिलती रहें, इसलिए उनका नाम हमेशा के लिए अजरामर रहें, इस हेतु, से सभा उनके नामपर गौरव स्थिरनिधियां स्थापन करना चाहती हैं ।

● इन सभी सत्पुरूषों के नाम पर राष्ट्रीयकृत बैंक में सभा गौरव स्थिरनिधियां स्थापन करेंगी । इन निधियों को कोई भी व्यक्ति, सभा के प्रस्ताव से भी निकाल नहीं सकती। इससे गौरव स्थिरनिधियों का नाम व धन कायम रूप से अजरामर रहता हैं ।

* गौरव स्थिरनिधियों के वार्षिक ब्याज से समाज में वेदप्रचार का कार्य होता रहेगा । इन आर्यसेवकों ने समाज, राष्ट्र व देश के लिए सार्वकालीक कल्याण का वैदिक मार्ग दुनियां को बताने का प्रयास किया, जिसके लिए वे जीवनभर प्रयत्नशील रहें । इन्हीं पवित्र भावनाओं, उद्देश्यों और उनके कार्यों को सामने रखते हुए उनके पश्चात् भी वह कार्य अविरत गति से उन्हीं के नामों पर चलता रहें और मानवमात्र को उसका लाभ मिलता रहें ।

● इस प्रकार के गौरव करने से जीवित आर्यसेवकों को प्रसन्नता, आनन्द व हर्ष होगा । उन्हें यह अनुभूति होगी कि हमारा जीवन सचमुच धन्य हो गया । एक तरह से यह जीवित श्राद्ध व तर्पण ही है ।

● जो महानुभाव आज इस संसार में नहीं हैं, सभा उनकी स्मृतियों में स्मारक गौरव कर रही हैं । इससे एक महान इतिहास बनेंगा और समाज को भी अनन्त कालतक इनके जीवन व कार्यों का स्मरण होता रहेगा । एक तरह से उनके नाम व काम अजरामर होते रहेंगें ।

● इन जीवित आर्यसेवकों के गौरव अथवा दिवंगत सत्पुरूषों के स्मारक गौरव के माध्यम से निम्नबातें सफल होंगी -

१) जिन परिवार के सदस्यों ने अपने पिता, दादा या नाना के त्याग,तप व समर्पण के कारण अनेकों कष्ट सहन किये और उन्हें अनेंको अडचनों का सामना करना पडा, उन्हें इस गौरव कार्य से एक प्रकार का संतोष मिलेगा और उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा मिलती रहेगी । उनके कामों व गुणों का अनुसरण करते हुए वे अच्छाइयों को बढाते रहेंगें ।

२) समाज के लोग तथा नई पीढी को उन सत्पुरूषों के कार्यों का पता चलने से उनके बारे में आदर व सम्मान बढेगा तथा उन जैसा जीवन बिताने की प्रेरणा भी उनको मिलती रहेगी ।

३) आर्य जगत् के कार्यकर्त्ता भी उन गौरवमूर्तियों से प्रेरणा लेते रहेंगें और आर्य समाज का काम तन-मन-धन से त्याग, तप व समर्पण पूर्वक करते रहेंगें ।

इसीलिए उन सभी महात्माओं के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना हमारा कर्तव्य है । अतः उनके नामाभिधान को सामने रखकर व उनसे प्रेरणा पाकर सभी लोग स्थिरनिधियों में दानदाशियाँ प्रदान करें । इन गौरव या स्मारक स्थिरनिधियों में धनराशियां प्रदान करनेवालों का क्रम इस प्रकार होगा -

१) प्रान्तीय सभा के सभी पदाधिकारी व सदस्यों ने सर्वप्रथम इन स्थिरनिधियों में दानराशियां प्रदान करनी चाहिए।

२) तत्पश्चात् आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं तथा आर्य जगत् के अन्य सदस्यों का भी कर्तव्य है कि वे अपनी निधियां देवें ।

३) इनके पश्चात् उनके मित्रजन स्नेही, शिष्य, सम्बन्धी लोग रिश्तेदार आदि सभी अपनी दानराशियां प्रदान करें ।

४) अन्त में अपने घर - परिवार के पुत्र, पौत्रादि सदस्य लोग अपने महान व्यक्तियों का गौरव और अधिक बढे, इस भावना से निधियां देवें । अथवा समाज के घटकों से जितनी निधियां संकलित होगी, उनमे अपनें परिवार की ओर से निधियां मिलाकर बडी स्थिरनिधि बना सकते हैं ।

सभा ने विभिन्न स्थानों के आर्यजनों का गौरव करने का निर्णय लिया है, तदनुसार आगामी दि. २६ मार्च २०१६ को लातूर के गांधी चौक आर्य समाज में निम्नलिखित आर्य विभूतियों का गौरव होने जा रहा है ।

१) स्वा.सै.बापुरावजी मास्तर (उ.बाद)
२) स्वा.सै. पोशट्टीदादा उनग्रतवार (देगलुर)
३) स्व.शालिग्रामजी बसैये (सम्भाजीनगर),
४) स्व.रामचन्द्रावजी मोरे (बोटकूळ)
५) स्व.लेखराजजी आर्य (धुलियां)
६) स्व.रामपालजी लोहिया (परली-वै.)
७) स्वा.सै. बलीरामजी पाटील, (निलंगा),

८)स्वा.सै.हिरामनजी डोईजोडे (औराद)
९)स्वा.सै.तुकारामजी गंजेवार (धर्माबाद)
१०)स्वा.सै.मन्मथ चिल्ले (करडखेल)
११)स्वा.सै.गुलाबचंद लदनिया (हिंगोली)
१२) श्री सखारामजी डुबेवारजी (हिंगोली)
१३)श्री कृष्णचंद्रजी आर्य (पिंपरी पुणे)
१४)श्री माणिकरावजी भोसले (लातूर)
१५)श्री बद्रीनारायण तोष्णीवाल (हदगांव)
१६)श्री बाबुरावजी तेरकर (लातूर)

इस ऐतिहासिक समारोह में के अध्यक्ष के रूप में सभा के पूर्व प्रधान पू. श्री स्वामी श्रद्धानंदजी सरस्वती तथा प्रमुख अतिथि के रूप में पूर्व सांसद डॉ.श्री जनार्दनरावजी वाघमारे, वैदिक विद्वान पं. हरिशंकरजी अग्निहोत्री तथा भजनोपदेशक पं. भूपेन्द्रसिंहजी आर्य उपस्थित होगें ।

अतः इस समारोह में आप सभी सहपरिवार सादर आमंत्रित हैं ।

नम्र निवेदन – ज्येष्ठ आर्य सेवकों के गौरव का कार्य शुरू होनेके मौकेपर मैं बीमार पडा । रूग्णावस्था के कारण निधिसंकलन हेतु मैं घूम नहीं सका । उन-उन आर्य सेवकों के परिवारों व स्थानीय आर्य समाजों के सदस्यों को मिल भी नही सका । इसका मुझे भारी खेद है । लेकिन यह पवित्र काम पूरी तरह से सफल होना चाहिए । यह मेरी दृढ आन्तरिक भावना है । इसकी पूर्ति के लिए हर एक ने स्वयं की अधिक से अधिक निधि प्रदान करें । आर्य सभा के पदाधिकारी, कार्यकर्त्तागण समय निकालकर निधि संकलन हेतु दानदाताओं से सम्पर्क करें । अपने-अपने विभाग के आर्यजन इस दृष्टि से विशेष प्रयत्न करें । इस पवित्र कार्य को पूरी निष्ठा के साथ यशस्वी बनावे, यही नम्र विनती है ।

– डॉ. ब्रह्ममुनि (सभाप्रधान)

श्रीमती मायर विधवा महिला सहाय्यता –आवेदन सूचना

पूज्या स्व. श्रीमती शान्तिदेवी मायर (मिडैक्स-लन्दन) द्वारा विधवा महिलाओं के उत्थान के लिए सभा में **श्रीमती शान्तिदेवी विधवा महिला सहाय्यता स्थिरनिधि** स्थापित की थी । जिसके ब्याज से विधवा महिलाओं को आर्थिक सहाय्यता मिलती रहें । शर्त है की वह महिला भूमिहीन, नौकरी न करनेवाली, पुनर्विवाह न करनेवाली, पेन्शन न पानेवाली, अपनी मकान का किराया प्राप्त न करनेवाली हो । साथ ही वह अत्यन्त गरीब व मजदूरी करके आजीविका चलानेवाली तथा बच्चोंवाली हो, उसे किसी जाति, पन्थ या मजहब का बन्धन नहीं है ।अतः ऐसी इच्छुक महिलाये सहाय्यता हेतु अपने आवेदन पत्र सभा कार्यालय के पते पर भेंजें ।

– सभामंत्री

अदम्य साहस की प्रतिमूर्ति लेखराजजी आर्य

–डॉ. विमलकुमार आर्य

चाैदह अगस्त सन उन्नीस सौ सैंतालिस को भारत का विभाजन हो गया और पाकिस्तान का अभ्युदय होते ही हिन्दुओं के प्रति नफरत का भाव ही नहीं, अपितु घर-बार छोडकर भारत आने के लिए मजबूर किया गया। साम्प्रदायिक शक्तियों ने मानवीय मूल्यों को तार-तार कर दिया। बहू-बेटियों की अस्मिता को बचाने के लिए भारत आना हिन्दुओं की मजबूरी थी, ऐसी परिस्थिति में महर्षि दयानन्द सरस्वती के मिशनरी भाव को लेकर वहावलपुर(अब पाकिस्तान में) से एक परिवार मुजफ्फरनगर में शरणार्थी के रुप में आया। इसी परिवार में एक बालक अपने में अदम्य साहस समेटे हुए आया और वह था **लेखराज**। बालक लेखराज में शिक्षा प्राप्त करने के साथ दो परिवार के पोषण का दायित्व भी था। उसी समय मुजफ्फरनगर में उत्तर प्रदेश परिवहन के बस स्टैण्ड पर एक कुएं की खुदाई का कार्य लेखराज को मिल गया। साथ ही एक विद्यालय में प्रवेश भी मिला। परिश्रम से परिपूर्ण अदम्य साहस और आस्तिकता की प्रतिमूर्ति यह यशस्वी बालक लेखराज दिन में विद्यालय पढने जाता और रात्रि में कुंए की खुदाई का कार्य करता। उससे जो भी आमदनी होती अपने परिवार के पोषण और पढाई का बोझ उठाता।

कुंए की खुदाई का कार्य जब पूर्ण हुआ तब एक रिक्शा किराये पर लिया। रात्रि में रिक्शा चलाकर अपने खर्च पूरे करता। शिक्षा के क्षेत्र में सारे साथियों में बालक लेखराज कुशाग्र बुद्धि और शान्त स्वभाव का था। इस स्वभाव का प्रमुख कारण था ईश्वर की भक्ति। वैदिक सन्ध्या नियमित करते हुए आर्य समाज के हवन और सत्संग भी जाया करता था। एक दिन सर्दी में रात्रि का समय था। लेखराज मुजफ्फरनगर उत्तरप्रदेश के रेल्वे स्टेशन पर सवारियों की प्रतिक्षा में था। सर्दी के कारण मुँह पर कपडा बाँध रख्खा था। एक सवारी आयी और अपना स्थान बताया। लेखराज उचित स्थान पर सवारी छोड दी। सवारी ने पैसे पूछे– 'कितने दे दूँ ?' उत्तर आया, 'गुरुजी आशीर्वाद दे दो, पैसे नहीं चाहिये!', सवारी ने पहचानने में देर नहीं की। 'बेटा लेखराज तुम रिक्शा चलाते हो! तुम कल से रिक्शा नहीं चलाओगे।'

लेखराज बोला, 'गुरुजी! परिवार का पालन और पढाई दोनों का भार कैसे उठाऊँगा?' गुरुजी ने उत्तर दिया, 'बेटा तुम्हारी पढाई के खर्च का दायित्व मैं पूरा करुँगा ।' लेखराज ने गुरुजी से कहा, 'गुरुजी ! आशीर्वाद दे दों मुझे निकम्मा बनाने की प्रेरणा आप ही दे देंगे, तो कैसे होगा? पुरुषार्थ की प्रेरणा तो हम प्रतिदिन गायत्री मंत्र में ईश्वर से ही माँगते हैं।' गुरु का हृदय गद्गद् हो गया ।

कुछ समय बाद शिक्षा व परिवार के पोषण के कार्य सुचारु रुप से चल रहे थे । पिता ने विवाह कर दिया। रिक्शा चलाने के कार्य को लेकर लेखराज के ससुराल वालों ने कहा कि 'हमारी बदनामी होती । है कुछ और काम करें।' इसी बीच लेखराज ने मुजफ्फरनगर छोडने का निश्चय किया और धुलिया(धुले) महाराष्ट्र आकर बस गये। अपनी जीवनयात्रा कुमार नगर धुलिया में प्रारम्भ की। लेखराज में पिता भी आर्य सिद्धान्तों के धनी थे । अपने पिताजी तथा मास्टर अमरलालजी, दयालदासजी, मुरलीधरजी रेलने आदि को संघटित कर आर्य समाज कुमारनगर धूलिया की स्थापना की । अपने व्यापार को भी खूब चमकाया तथा आर्य समाज की लगन लेकर वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में सदैव आगे रहे । आर्य प्रतिनिधि महाराष्ट्र के उपप्रधान भी थे । वानप्रस्थ की दीक्षा लेकर 'वेद्मुनिजी' बनें और प्रचार-प्रसार को अधिक गति दी । सरलता, स्थिरता अहंकार शून्यता उनके आचरण में समाहित थी, जो विशेष साधना से ही सम्भव है। लेखक का उनसे वेदप्रचार कार्यक्रमों के कारण आत्मीय सम्बन्ध रहा है, इसी कारण उनके श्रीमुख से बताये गये संस्मरण उनकी याद में आनेवाली पीढियों को प्रेरणा देने लिए लिख रहा हूँ । ऐसा वैदिक मिशनरी व मानवता प्रेमी दि. २ फरवरी २०१५ ई. को संसार से चला गया । उनकी प्रथम पुण्यतिथि पर मैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ ।

- नेवादा गढी, पो.गोंडवा
जि.हरदोई (उ.प्र.)मो.९४५१२०९६८२

विद्यार्थी सहाय्यता निधि - आवेदन पत्र हेतु सूचना

डॉ. तानाजी आचार्य (लंदन) की प्रेरणा से महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा में असहाय्य छात्रों के लिए मानवदत्तक योजना कार्यान्वित है । इसके अनुसार समाज के गरीब परिवारों में अध्ययन करनेवाले छात्रों के लिए आर्थिक सहाय्यता की जाती है । अतः जो बुद्धिमान छात्र धन के अभाव में पढ नही पाते । ऐसे छात्रों एवं उनके अभिभावकों से निवेदन है कि वे स्थानीय आर्य समाजों द्वारा सभा को आवेदन पत्र भेजें और इस सहाय्यता निधी लाभ उठावें । - सभामन्त्री

सभान्तर्गत आर्य समाजों को सूचनाएं

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा अपने अन्तर्गत आनेवाली सभी आर्य समाजों से अनुरोध है कि कृपया वे निम्नलिखित सूचनाओं का पालन करें ।

१) सभी आर्य समाजें अपनी स्थायी व अस्थायी सम्पत्ति सम्बन्धी जानकारी स्थानीय ग्रामपंचायत अथवा नगरपालिका कार्यालयों में दर्ज कराते समय अपनी आर्य समाजों के नाम से पूर्व **'महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभान्तर्गत आर्य समाज..........'** ऐसा उल्लेख अवश्य करें । अपने लेटरपैड पर भी ऐसा ही छपवावें । किसी सरकारी कार्यालय वा कार्यक्रमों के लिए भी पत्र देते समय उसपर भी ऐसा ही नामोल्लेख हों । प्रान्तीय सभा के साथ भी इसी नाम से पत्रव्यवहार करते रहें । इससे धर्मादाय आयुक्त कार्यालय में हमें किसी प्रकार की असुविधा न होगी ।

२) सभी आर्य समाजें अपनी अपनी आर्य समाजों के पूरे पते, पिनकोड के साथ सभा को भेजें । साथ ही किन्हीं दो सक्रिय पदाधिकारियों अथवा कार्यकर्त्ता के नाम व उनके मोबाईल क्रमांक भी अवश्य बता देवें, जिससे आपसे पत्रव्यवहार करने या सूचनाएं पहुंचाने में कठिनाई न हो ।

३) सभी आर्य समाजें अपनी अपनी समाजों के १ अप्रैल २०१५ से ३१ मार्च २०१६ इस आर्थिक वर्ष के आय-व्यय विवरण शीघ्रतः सभा कार्यालय को भेज देवें ।

४) लातूर के गान्धी चौक आर्य समाज के वार्षिकोत्सव (दि. २५,२६ व २७ मार्च २०१६) के सुअवसरपर दि. २६ मार्च २०१६ को दोपहर १ बजे सभाद्वारा आयोजित १६ ज्येष्ठ आर्य सेवकों के गौरव समारोह मे आप सभी आर्य समाजों के पदाधिकारी, सदस्य व कार्यकर्त्तागण अवश्य पधारें । **- मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्र.सभा**

ग्रीष्मकालीन सभी शिविर स्थगित

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा ग्रीष्मकालीन अवकाश में प्रतिवर्ष आयोजित किये जानेवाले सभी **'मानवता संस्कार व आर्य वीर दल शिविर'** तथा **'आर्य कन्या संस्कार शिविर'** इस वर्ष नहीं होगें । पेयजल की भीषण समस्या को ध्यान में रखते प्रान्तीय सभा ने ये सभी शिविर स्थगित किये हैं ।

पानी के अभाव के कारण परली गुरूकुलाश्रम में होनेवाला **निवासी बाल संस्कार शिविर** भी नहीं होगा । **- सभामन्त्री**

राष्ट्रनिर्माणार्थ ज्येष्ठ आर्यजनों से आवाहन

इस समय देश कठिन परिस्थितियों से गुजर रहा है । बढती अनिष्ट घटनाओं से समाज विकृत बन रहा है । अविचारों की बढती आंधी के कारण सम्पूर्ण विश्व की दयनीय दशा हो चुकी है । ऐसे चुनौतीभरे वातावरण में केवल आर्य समाज ही इसे नई दिशा दे सकता है । महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वैदिक विचारधारा ही इन सभी को ठीक कर सकती है । किन्तु जब आर्य समाज के प्रहरीस्वरूप आर्य कार्यकर्त्ता ही अकर्मण्यवादी बने रहेंगें, तो समाज की स्थिति और भी अधिक चिन्ताजनक हो जाएगी

इसके लिए अब आर्यजनों को अवश्य ही आगे आना पडेगा । बच्चों व युवकों में नैतिक शिक्षा व सुसंस्कारों का बीजारोपण करने हेतु उन्हें प्रबोधन की आवश्यकता है । साथ ही समाज में व्याप्त अन्धविश्वास निर्मूलन, जातिप्रथानिवारण, कृषकों की बढती आत्महत्याएं तथा गृहस्थाश्रमियों का पथप्रदर्शन, योगप्रचार, स्वास्थ्यरक्षा, सेवा, संगठन, मानव निर्माण अभियान, कृषिसुधारकार्य, गौरक्षाजागरण, वृक्षसंवर्धन, पर्जन्यवृष्टि यज्ञों के आयोजन, वैदिक १६ संस्कारों का प्रचार, जनजागृति, गुरूकुल सेवा आदि कार्यों में ज्येष्ठ आर्यजन अपना योगदान दे सकते हैं । इन कार्यो में सम्मिलित होने से अपना यश व कीर्ति बढेगी और जीवन का मार्ग भी पुण्यप्रद व आध्यात्मिक बनेगा । अतः इन कार्यो में समय देने के इच्छुक ज्येष्ठ आर्यजन प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्पर्क **करें** ।

– मन्त्री, म.आ.प्र.सभा

योग साधना व जीवन निर्माण का उत्तम केंद्र

आर्य वानप्रस्थ आश्रम, परली वैजनाथ

आयु के ५०-६० वर्ष बिता चुके तथा गृहस्थाश्रम की जिम्मेदारियों मुक्त, अपनी शासकीय व अशासकीय नोकरियों से सेवानिवृत्त हो चुके तथा सांसारिक मोहबन्धनों से ऊब चुके सज्जन महानुभावों, दम्पतियों के लिए स्वास्थ्य रक्षा, सेवा, स्वाध्याय, आध्यात्मिक साधना हेतु **आर्य वानप्रस्थ आश्रम, परली वैजनाथ जि बीड- (महा.)** में पूरी व्यवस्था है। वे यहां पर आकर ठहर सकते हैं। साथ ही अपनी सेवाओं में कार्यरत व्यक्ति, व्यापारी लोग भी वर्ष में एक यां दो बार आकर दस – पन्द्रह दिनों तक रह सकते हैं। यहां पर प्राकृतिक व आयुर्वेदक चिकित्सा, ध्यान धारणा केंद्र, वैदिक ग्रन्थालय, वैदिक अनुसन्धान केंद्र, आदि द्वारा स्वास्थ रक्षा, योग-साधना, स्वाध्याय-चिंतन, लेखन का लाभ उठा सकते हैं। सभी सज्जनों का स्वागत हैं !

– व्यवस्थापक

समाचार दर्पण

टंकारा में ऋषिबोधोत्सव

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी महर्षि दयानन्द की जन्मस्थली टंकारा (जि. मोरवी-गुजरात) में दि. ६,७ व ८ मार्च २०१६ को भव्य रूप में ऋषि बोधोत्सव का आयोजन हो रहा है। दयानन्द स्मारक ट्रस्ट द्वारा आयोजित इस बोधोत्सव के त्रिदिवसीय सम्पूर्ण समारोह के अध्यक्ष डी.ए.वी.कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति के प्रधान श्री पूनमजी सूरी होंगे। भजनोपदेशक के रूप में प्रसिद्ध आर्योपदेशक पं.श्री सत्यपालजी पथिक एवं श्री दिनेशजी पथिक (अमृतसर) को आमन्त्रिमत किया गया है। दि. ७ मार्च को आयोजित मुख्य समारोह में केन्द्रीय कृषिमन्त्री श्री मोहनभाई कुण्डारिया मुख्यातिथि तथा गुजरात की महिला एवं बाल कल्याण मंत्री श्रीमती वाशोबेन नरेन्द्रभाई त्रिवेदी विशिष्ट अतिथि होंगे। इस समारोह की अध्यक्षता प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्रजी अग्रवाल करेंगे। आचार्य श्री रामदेवजी के ब्रह्मत्व में यजुर्वेद पारायण यज्ञ हो रहा है

मुम्बई में २६ व २७ मार्च को वेद-ज्योतिष सम्मेलन

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई वैदिक मिशन द्वारा आर्य समाज, सान्ताक्रुझ, मुम्बई में दि. २६ व २७ मार्च २०१६ को वेद ज्योतिष सम्मेलन का आयोजन हो रहा है। इस सम्मेलन की अध्यक्ष श्रीमद्दयानन्द वैदिक गुरूकुल महाविद्यालय के प्रमुख संचालक स्वामी प्रणवानन्दजी सरस्वती करेंगे। प्रस्तुत समारोह में सर्वश्री स्वामी धर्मानन्दजी, स्वामी ब्रह्मानन्दजी, स्वामी धर्मेश्वरानन्दजी, स्वामी आर्यवेशजी, मिठाईलालसिंहजी, अरूणजी अबरोल, कैप्टन रूद्रसेनजी आर्य, चद्रभानुजी आर्य, डॉ. रघुवीरजी वेदालंकार, आचार्या डॉ. सूर्यादेवी, पं.डॉ.वेदप्रकाशजी श्रोत्रिय, डॉ. धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री, डॉ. जयदत्तजी उप्रैति, डॉ. ज्वलन्तकुमारजी शास्त्री, डॉ. प्रशस्यमित्रजी शास्त्री, डॉ. सुरेन्द्रकुमारजी, डॉ. बलवीरजी आचार्य आदि विद्वान् पधार रहे हैं। अतः इस सम्मेलन में सम्मिलित होने का अनुरोध संयोजकों ने किया है।

गौग्रास दानदाताओं के धन्यवाद

श्रद्धानन्द गुरूकुल आश्रम परली की गौशाला में गौग्रास (चारा) के लिए पुरूषार्थी उद्योजक श्री विक्रम सुग्रीव काले, आर्ययुवक श्री महेश रामकृष्णजी लाहोटी तथा दानी आर्य कार्यकर्त्ता श्री जयकिशोरजी हरिप्रसादजी दोडिया ने अपनी ओर से विशेष दानराशियां प्रदान की हैं। एतदर्थ इन सभी दानदाताओं के हार्दिक धन्यवाद !

शोक समाचार सार्वदेशिक सभा के प्रधान, गौभक्त, धर्मात्मा

पूज्य आचार्य बलदेवजी का परलोकगमन

आर्य जगत् की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा वेद व व्याकरण के ज्ञाता, आर्ष गुरूकुलीय शिक्षा प्रणाली के संवाहक, गौभक्त एवं वीतराग कर्मयोगी महात्मा पूज्य आचार्य बलदेवजी का दि. २८ जनवरी २०१६ को अल्प सी दुर्घटना के कारण दुःखद निधन हुआ । उनकी आयु लगभग ८५ वर्ष की थी ।

आचार्यजी के चले जाने से समस्त आर्य जगत् में शोक की लहर छा गयी है। अनेकों यशस्वी शिष्यों व अनुयायियों को अपने आचार्यप्रवर के चले जाने से गहरा आघात पहुंचा है । आचार्यजी का समग्र जीवन सादगीपूर्ण तपस्या, साधना, आर्ष विद्या के प्रसार व प्रचार में व्यतीत हुआ । सारे संसार में योगक्रान्ति का शंखनाद करनेवाले बाबा रामदेवजी के वे गुरू रहें । गुरूकुल झज्जर व कालवा में आपका सान्निध्य पाकर अनेकों शिष्य वेद व व्याकरण के यशस्वी विद्वान् बन गये । इनमें से कई गुरूकुलों का संचालन कर रहें, तो कई विभिन्न शिक्षा संस्थानों में अध्यापक व प्रोफेसर बनकर, तो कई आर्य समाज के प्रचार व प्रसार में योगदान दे रहें हैं ।

आप हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के कई वर्षों से प्रधान रहे । सार्वदेशिक सभा के प्रधानपद को विभूषित कर आपने आर्य संगठन को बढाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है । आपके नेतृत्व में इ.स. २०१२ में दिल्ली में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन काफी सफल रहा ।

पूज्य आचार्यजी अपने शिष्य जयपाल के साथ दि. २७ जनवरी की रात्रि में गुरूकुल कालवा से दयानन्द मठ, रोहतक के लिए चल पडे और २८ को प्रातः ४ बजे पहुंचे । प्रतिदिन की भांति वे ४.१५ बजे प्रातर्भमण के लिए निकले थे । बाहर वातावरण में धुन्ध के कारण किसी वस्तु से उनकी ठोकर लगी और वे गिर गये । इससे उनके नाक, आंख, तथा दांत को चोट आयी और मुंहपर गहरा घाव हुआ । रक्तस्राव अधिक होने से वे काफी अस्वस्थ हो गये । उन्हें तुरन्त अस्पताल भरती कराया गया किन्तु **'ईश्वरेच्छा बलीवसी.... जो होना सो हो गया....।'** आर्य जगत् की यह महान विभूति परलोक सिधार गयी । २९ जनवरी को दोपहर १२ बजे पू. आचार्यजी के पार्थिव शरीरपर दयानन्द मठ रोहतक (हरियाणा) में पूर्ण वैदिक रीति से अन्तिम संस्कार किये गये । इस अवसर पर दयानन्द के इस अनन्य भक्त को अन्तिम

बिदाई देने के लिए उनके परम शिष्य स्वामी रामदेवजी, हरियाणा के मुख्यमन्त्री मनोहरलाल खट्टर, हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल आचार्य देवव्रतजी, राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेन्द्रसिंह हुड्डा, सार्वदेशिक के मन्त्री श्री प्रकाश आर्य, उपप्रधान सुरेशचन्द्र आर्य, विभिन्न प्रान्तीय सभाओं के प्रधान मन्त्री, पदाधिकारी संन्यासी व मुनिवृन्द, वैदिक विद्वान, गुरूकुलों के आचार्य तथा शिष्यवृन्द भारी संख्या में उपस्थित थे ।

महाराष्ट्र सभा व आर्य समाजों की श्रद्धांजलि !

'आचार्यजी आर्यों के शक्तिपीठ व दीपस्तंभ थे ।'- प्रधान डॉ.ब्रह्ममुनि

'दयानंद के सपनो को आचार्यजी ने साकार किया ।'- मंत्री देशपाण्डे

सार्वदेशिक आर्य प्र. सभा के प्रधान पू. आचार्य बलदेवजी के निधन पर महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा व राज्य की आर्य समाजों ने तीव्र शोकसंवेदनाएं प्रकट करते हुए अपनी भावपूर्ण श्रद्धाजंलियां अर्पित की हैं । सभाप्रधान श्री डॉ. ब्रह्ममुनिजी ने कहा -'महान तपस्वी गौभक्त पूज्य आचार्य श्री बलदेवजी आर्यों के **शक्तिपीठ** थे । उनका सादगीपूर्ण विरक्त जीवन **दीपस्तम्भ** की भांति युगों-युगों तक प्रेरणा देता रहेगा । परमात्मा के वे निःसीम भक्त व प्रखर सिद्धान्तनिष्ठ थे ।' उन्होंने आगे बताया कहा- आध्यात्मिक साधना के कारण उनका सर्वत्र प्रभाव रहा है । फलस्वरूप उनके द्वारा चलाये गये अनेंकों आन्दोलन सफल रहें । गोमाता की रक्षा व संवर्धन में उन्होंने अपना सारा जीवन लगाया था । हमारे आग्रह पर प्रान्तीय सभा के कार्यक्रमों के लिए वे दो बार महाराष्ट्र आये थे । उनके पावन पदस्पर्शों से हमारी भूमि धन्य हो गयी है ।'

सभामंत्री श्री माधवराव देशपाण्डे ने अपनी संवेदना प्रकट करते हुए पू. आचार्यजी को वर्तमान समय के निःसंगपरित्यागी योगी बताया । उन्होंने कहा कि - 'स्वाधीनता के बाद देश को अनेकों प्रतिभाशाली वेदप्रचारक, विचारक व आचार्य तथा बाबा रामदेवजी जैसे अन्तर्राष्ट्रीय धुरन्धर योगप्रसारक प्रदान कर आचार्य बलदेवजी ने महानतम कार्य किया है । उन्होंने ऋषि दयानन्द के सपनों को साकार करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं ।'

आर्य समाज परली में आयोजित संत्सग में सभी सदस्यों ने एक मिनट का मौन धारण कर श्रद्धाजंलि अर्पण की है । साथ ही राज्य के पुणे, नासिक, जलगांव, सोलापूर, नांदेड, संभाजीनगर, लातूर, धुलिया, नगर, हिंगोली, परभणी, धाराशिव आदि स्थानों की आर्य समाजों ने भी श्रद्धासुमन अर्पण किये हैं ।

|| कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ||

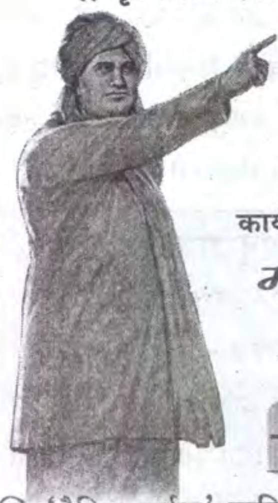

वेदों की ओर लौटो !

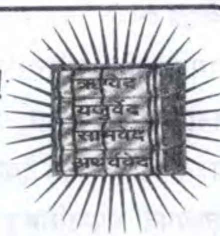

वेद प्रतिपादित मानवीय
जीवन मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु

कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

(पंजीयन-एच. 333/र.नं.६/टी.इ. (७)१६७/१०४९,
स्थापना ५ मार्च १९७७)

- मानवकल्याणकारी उपक्रम -

- ‘वैदिक गर्जना’ मासिक मुखपत्र
- आर्य समाज दिनदर्शिका
- पू. हरिश्चन्द्र गुरूजी गौरव-‘मानवता संस्कार एवं आर्यवीरदल शिविर’
- आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर
- पातञ्जल ध्यानयोग शिविर
- प्रान्तीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर
- पुरोहित प्रशिक्षण शिविर
- मानव जीवनकल्याण वेद प्रचार (श्रावणी) उपाकर्म अभियान
- स्व. विठ्ठलराव बिराजदार स्मृति विद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- सौ. तारादेवी जयनारायणजी मुंदडा विद्यालयीन राज्य.निबंध स्पर्धा
- सौ. कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले (आनन्दमुनि) महाविद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- विद्यार्थी सहायता योजना
- सौ.डॉ. विमलादेवी व श्री डॉ.सु.ब.काले (ब्रह्ममुनि) महाविद्यालयीन राज्य. निबन्ध स्पर्धा
- स्व.पं. रामस्वरूप लोखण्डे स्मृति संस्कृत राज्य प्रतियोगिताएं
- मानवजीवन निर्माण अभियान - विद्यालय व महाविद्यालयों के लिए (वैदिक व्याख्यानमाला)
- शान्तिदेवी मायर स्मृति मानवनिर्माण एवं सेवा योजना
- स्व. भसीन स्मृति एवं मायर गौरव स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा शिविर
- शान्तिदेवी मायर विधवा सहाय्यता योजना
- वैदिक साहित्य भेट योजना
- पंथ-जातिप्रथा निर्मूलन अभियान
- वैदिक साहित्य प्रकाशन योजना
- आपत्कालीन सहायता योजना
- पर्जन्यवृष्टि यज्ञ अभियान
- गौ-कृषि सेवा योजना
- स्वा.सै.श्री गुलाबचंदजी लदनिया गौरव राज्य योगासन प्रतियोगिता
- सौ.धापादेवी गु. लदनिया गौरव राज्य प्राणायाम प्रतियोगिता

॥ ओ३म् ॥

माझ्या मराठीचा बोलु कवतिके। परि अमृतातेही पैजेसीं जींके ।
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें । मेळवीन ॥ (संत ज्ञानेश्वर)

मराठी विभाग

सुभाषित सन्देश — शरीराद्वारे अमरत्व प्राप्ती

इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति न चेदिहोवदीन्महती विनष्टिः ।
भूतेष भेतेषु विचिन्त्य धीराः प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति ॥

अर्थ– हा देह असतांना त्याद्वारे जर ब्रह्मतत्वाला ओळखले व जाणले तरच खऱ्या अर्थाने सुख प्राप्त झाले, असे समजा ! अन्यथा जर या देहाने त्याला जाणू शकलो नाही, तर महाविनाश झालाच म्हणून समजा ! ज्ञानी माणसे प्रत्येक प्राण्यांमध्ये ब्रह्म्याचे अस्तित्व समजतात व या लोकातून (परलोकी) जाऊन अमर होतात.

(कठोपनिषद – २/५)

दयानंदांची अमृतवाणी — मूर्तिपूजा सनातन नाही.

प्रश्न– मूर्तिपूजा व तीर्थयात्रा या गोष्टी सनातन काळापासून चालत आलेल्या आहेत ? त्या खोट्या कशा असणार ?

उत्तर – तुम्ही सनातन कशाला म्हणता ? जी गोष्ट अनादी काळापासून चालत आलेली असते, तिला सनातन असे म्हणतात. जर या गोष्टी सनातन असत्या तर वेदांमध्ये आणि ब्राह्मण वगैरे ऋषिमुनिकृत ग्रंथांमध्ये त्यांचा उल्लेख आला असता की नाही ? याचे कारण काय ? याचे कारण असे की, मूर्तिपूजा ही अडीच–तीन हजार वर्षांपूर्वी वाममार्गी व जैन लोकांनी सुरू केली आहे. याआधी ती आर्यावर्त्तामध्ये अस्तित्वात नव्हती. त्यावेळी ही तीर्थक्षेत्रे ही नव्हती. जेव्हा जैनांनी गिरनार, पालिताणा, सम्मेतशिखर, शत्रुंजय, आबू वगैरे तीर्थक्षेत्रे निर्माण केली, तेंव्हा पुराणिकांनी ही त्यांच्या सारखीच आपलीही तीर्थक्षेत्रे तयार केली. या बाबतीत कोणाला खात्री करून घ्यावयाची असल्यास त्याने पंड्याकडे असलेल्या जुन्या वह्या, ताम्रपट वगैरे पाहावेत.

त्यावरून लक्षात येईल की ही सारी तीर्थक्षेत्रे गेल्या हजारे वर्षाच्या आतलीच आहेत. एक हजार वर्षाहून अधिक जुनी नोंद कोणाजवळही नाही.यावरून ही तीर्थक्षेत्रे आधुनिक असल्याचे सिद्ध होते. (स. प्र.–११ वा समु.)

आर्यजनहो ! फटाके नकोत, यज्ञ करा !

– पं. राजवीर शास्त्री

दिव्य मराठी दि.११.०१.२०१६ चे दैनिक वृत्तपत्रात वाचत असतांना माझी नजर सोलापूरात नुकत्याच पार पडलेल्या जिल्हास्तरीय ब्राह्मण पुरोहित संघाच्या अधिवेशनाच्या बातमीवर पडली ! त्या अधिवेशनात मांडल्या गेलेल्या ठरावांपैकी दोन ठराव सर्वांनीच विचारात घेण्यायोग्य आहेत.– अ) मंगल अष्टकानंतर वधू-वरांना उचलून घेतले जाते, ते टाळावे. ब) स्प्रे मारणे व स्टेजवर फटाके फोडणे हे प्रकार होऊ नयेत. हे वाचून मला बरे वाटले. अंशतः का होईना पौराणिक पुरोहितांना जाग आली. अंशतः एवढ्यासाठीच म्हटले की, त्यांनी फक्त स्टेजवरच्या स्प्रे व फटाक्याचा विरोध केला आहे. मंडपाबाहेर फोडल्या जाणाऱ्या बॉम्ब, फटाके व शोभेच्या दारुबाबत त्यांची काही तक्रार नाही. खरे तर कुठेही, कोणत्याही प्रसंगी कसल्याही प्रकारचे फटाके फोडले जाऊ नयेत. सर्वच कार्यक्रम हे फटाकेमुक्त झाले पाहिजेत, असा माझा आग्रह आहे. आज ४० वर्षापूर्वीपासून मी फटाक्यांना हात लावलो नाही. त्यात सुदैव असे की, माझ्या मुलांनीही कधी फटाक्यांसाठी हट्ट धरला नाही. माझ्या प्रमाणेच इतर परिवारांनी फटाक्यांपासून दूर राहावे यासाठी पत्रलेखन, चर्चा, सत्संग प्रवचनातून सतत प्रयत्न करीत आलो आहे. फटाके विरोधी प्रबोधनाने अनेक शाळेतील हजारो विद्यार्थी प्रभावित झाले. आम्ही दिवाळीमध्ये फटाके उडवणार नाही, असे हात उंचावून घोषित ही केले. पण त्यावर अमल किती जण करीत आहेत, याची मला कल्पना नाही. परंतु कांही हाताच्या बोटावर मोजण्या एवढे परिवार माझ्या डोळ्यासमोर आहेत जे पूर्णतः फटाके मुक्त झाले आहेत. खरे तर प्रत्येक आर्यसमाजी परिवाराला फटाके मुक्त होणे अत्यंत सहज आणि सोपे आहे. म्हणून प्रथमतः आर्यसमाजी व्यक्तींनी या कामी पुढाकार घ्यायला हवा. कारण आपण आर्य समाजी म्हणजे सच्चे ईशप्रेमी, देशप्रेमी, यज्ञप्रेमी आणि पर्यावरणप्रेमी सुद्धा ! असे असतांनाही आपण आपल्या मुला-मुलींच्या विवाहसोहळ्या प्रसंगी व दिवाळी सणात बिनधास्तपणे फटाके फोडतो. जेंव्हा की, हे यज्ञविरोधी कर्म आहे. आर्यसमाजी व्यक्तींसाठी ही विसंगती आहे. हा विचार आपण कसा करीत नाही ? याचे आश्चर्य वाटते. काही सांगायला गेलो, तर म्हणतात– आर्य समाजी लोकांनी काही

हौस मौज करु नये का ? एवढी निरसता काय कामाची ? समाजात राहायचे, तर सगळ्यांमध्ये मिसळावे लागते. तरीही आम्ही इतरांप्रमाणे पाच-दहा हजारांचे फटाके फोडत नाहीत. शिवाय आमच्या हातून थोडेसे प्रदूषण झाले तरी त्या बदल्यात आम्ही यज्ञ करतोच की ! मग बिघडले कुठे ? हा तर्क ऐकून मनाला फार यातना होतात.

पर्यावरण प्रदूषित झाल्याची ओरड सगळेच करीत आहेत. पण त्याला रोखण्याचा व दूर करण्याचा प्रयत्न करतांना कुणी दिसत नाहीत. याबाबतीत बरेच जण बेसावध किंवा बेजबाबदार असल्यासारखे वागतांना दिसतात. मग ते राजकीय पक्ष असोत ! सामाजिक संगठना वा संस्था असोत, धार्मिक व सांस्कृतिक मंडळे असोत, सुशिक्षित असोत की अशिक्षित असोत कुणालाच याचे गांभीर्य नाही. घरी मुलगा जन्माला आला की फटाके! बारशाला फटाके ! विवाह सोहळ्यात फटाके! वाढदिवसाला फटाके! शोभायात्रेत फटाके ! जत्रेत फटाके ! उत्सव-उरुसात फटाके ! सण-समारंभात फटाके! जयंती-पुण्यतिथीला फटाके! स्पर्धा जिंकली की फटाके ! निवडणुक जिंकली की फटाके ! उद्घाटनाला फटाके ! समारोपाला फटाके ! ३१ डिसेंबर रोजी फटाके! अहो, एवढेच नव्हे तर अन्त्ययात्रेत फटाके! या ना त्या कारणाने बाराही महिने दररोज व सर्वकाळ फटाके फुटतच आहेत. एक काळ होता की, या देशात प्रत्येक शुभ मंगल प्रसंगी यज्ञ करण्याची परंपरा होती. आज यज्ञाची जागा फटाक्याने घेतली आहे, हे दुर्दैवी आहे.

जरा विचार करा, जेंव्हा फटाके फोडणारी व्यक्ती भीत भीतच फटाक्याची वात पेटवित असते, फटाक्याच्या आवाजाने कानाला त्रास होतो. तो होऊ नये म्हणून बाजूचे लोक कानात बोटे घालून थांबलेले असतात. फटाक्याच्या उग्रवासाच्या भीतीने नाकही दाबून धरतात. शिवाय फटाक्याच्या कागद-सुतळ्याचा कचरा सर्वत्र पसरतो, तो वेगळाच! फटाक्याचा प्रताप अजून पुढेच आहे. दरवर्षी कुठल्या ना कुठल्या फटाक्याच्या कारखान्यात स्फोट होऊन कामगार मृत्यू पावल्याच्या बातम्या असतात. दीपावलीच्या सणामध्ये फटाक्यांच्या स्टॉलला आग लागून नुकसान झाल्याचे, कपडे जळाल्याचे, झोपडपट्टीला आग लागल्याचे वृत्त असते. बऱ्याच जणांचे हात भाजतात, डोळ्यांना इजा होते, अनेकांना श्वसनाचा त्रास जाणवतो, नाक-कान-घसा यांचे विकार

वाढतात. दमा व हृदयरोगांचा त्रास वाढतो. याविषयी खात्री करुन घ्यायची असेल तर दिवाळीच्या काळात जवळच्या छोट्या-मोठ्या दवाखान्यात जा व रोग्यांना पहा ! त्यांचेशी बोला, डॉक्टरांशी चर्चा करा, तुमच्यालक्षात येईल की फटाके फोडणे ही संस्कृती नसून विकृती आहे. धर्म नसून अधर्म आहे. पुण्य नसून पाप आहे, पैशाचा निव्वळ अपव्यय आहे. अज्ञानाचा खेळ आहे, असे असूनही लोकांना यातच का एवढा रस वाटावा ? हा एक प्रश्नच आहे. जरी यातून आनंद मिळतच असेल तरीही तो आनंद राक्षसी आनंद आहे !

सात्विक आनंद घ्यायचा तर मग यज्ञाकडे वळावे लागते. कारण यज्ञ हीच आपली खरी संस्कृती आहे, हाच खरा धर्म आहे. याच्या करण्याने सर्वांना सुखाची प्राप्ती होते. जरा यज्ञमंडपात जा आणि पहा ! यज्ञकुंडात अग्नीचे आधान करताना यजमानाला मुळीच भीती वाटत नाही, त्याच्या मनावर कसला ताण असत नाही. धगधगत्या हवनकुंडात आहुती देतांनाही तो प्रसन्न असतो. मंत्रोच्चाराचाही कुणाच्या कानाला कसलाच त्रास होत नाही. कानात बोटे घालण्याची वेळ कुणावर येत नाही. यज्ञातून निघालेल्या वायुचा त्रास होतो, म्हणून नाक दाबून धरावे लागत नाही. यज्ञ करणाऱ्यांच्या व यज्ञ कार्यात सहभागी यज्ञप्रेमी व्यक्तींच्या चेहऱ्यावर प्रसन्नता दिसून येते. यज्ञ करणाऱ्यांना शारीरिक, मानसिक व आत्मिक असे बरेच लाभ होतात. यज्ञ हा खऱ्या अर्थाने कामधेनू आहे. म्हणूनच शास्त्रकारांनी प्रत्येकाला दररोज सकाळी व संध्याकाळी यज्ञ करायला सांगितले आहे. याशिवाय प्रत्येक पर्व (सण) व संस्कार सुद्धा यज्ञाच्या आयोजनानेच सम्पन्न करावे असे विधान केले गेले आहे. **'सत्यार्थ प्रकाश'** या ग्रंथात महर्षी दयानंद दैनिक यज्ञाविषयी लिहितात - "जो यज्ञ (हवन) संध्याकाळी केला जातो. त्यातील हव्य द्रव्यातून आपल्याला सकाळपर्यंत सुखकारक वायू (हवा) प्राप्त होतो आणि जो यज्ञ सकाळी केला जातो, त्यातून आपल्याला शुद्ध वायुच्या मार्फत बल, बुद्धी व आरोग्याची प्राप्त होते." आणखी एके ठिकाणी ते लिहितात, "अग्निहोत्रामुळे हवा, पाऊस, पाणी यांची शुद्धी होऊन वृष्टिद्वारे संपूर्ण जगाला सुखाची प्राप्ती होते अर्थात् शुद्ध हवेचा श्वास-स्पर्श, खान-पान यामुळे आरोग्य, बुद्धी, बल, पराक्रम वाढतो. त्यामुळे धर्म, अर्थ, काम आणि मोक्षाचे अनुष्ठान पूर्ण होते. म्हणून अग्निहोत्राला देवयज्ञ म्हटले जाते." यज्ञ हा ऋषि चिंतनातून प्रकटलेला आविष्कारच आहे. यज्ञ पर्यावरणाला विषमुक्त ठेवण्याचे काम

करतो. यज्ञ ही रोगप्रतिबंधक व रोगनिवारक चिकित्सा पद्धती आहे. आज दीडशे वर्षापूर्वीच महर्षी दयानंदांनी यज्ञाला एक विज्ञान म्हणून पुनर्जीवित केले आणि आर्यसमाजाच्या माध्यमातून त्याच्या प्रचार वप्रसारावर भर दिला. खरे तर यज्ञ हेच आर्य समाजाचे ठोस कार्य आहे. यज्ञ हीच आर्य समाजीयांची ओळख आहे. असे असतांना आपण यज्ञाबाबत उदासीन आहोत, ही शोकांतिकाच म्हणावी लागेल.

फटाके खरेदी करतांना फटाक्यावर एवढे रुपये का म्हणून खर्चायचे ? असा प्रश्न कोणाला पडत नाही. पण यज्ञ करतांना खर्चाचा विचार जरुर केला जातो. दुसरी गोष्ट दिवाळी म्हणजे फटाके फोडावेच लागतात, यावर ते दृढ असतात. जवळ पैसा असो की नसो कांहीही करुन फटाके फोडतातच. त्याशिवाय त्यांना चैन पडत नाही. पण किती आर्य समाजी असे आहेत की, ज्यांना प्रत्येक पर्वप्रसंगी व संस्कारविधी प्रसंगी यज्ञ करावाच लागतो आणि यज्ञाशिवाय त्यांना चैन पडत नाही

आणखी एक मुद्दा असा की, जसे औषध-उपचाराच्या क्षेत्रात औषधाबरोबरच पथ्य आणि अपथ्याचाही विचार केला जातो. किंबहुना पथ्य-अपथ्यावरच औषधाचा प्रभाव अवलंबून असतो. तसेच केवळ यज्ञ करणे, पर्याप्त नसून ज्या-ज्या कारणामुळे पर्यावरण प्रदूषित होते, त्या-त्या गोष्टी करावयाच्या टाळल्याही पाहिजेत. त्यापैकी फटाके फोडणेही एक आहे. एक वेळ यज्ञ नाही केलात तरी चालेल, पण फटाके मात्र मुळीच फोडून का व फोडू देऊ नको! एवढे केलात तरी खूप आहे. फटाके फोडणाऱ्याला कुणी आशीर्वाद देत नाही. ना त्याची वाहवा केली जाते. याउलट यज्ञ करणाऱ्या यजमानाला मात्र विद्वान लोक आशीर्वाद देतात. त्यांची समाजात वाहवाही होते, ते उगीच नाही. यज्ञाचा अग्नी पवित्र असून तो विधायक आहे. फटाक्याचा अग्नी विघातक आहे. म्हणून संपूर्णपणे फटाकामुक्त होणे गरजेचे आहे. विवाहाच्या प्रसंगी निरर्थक अशा खूप गोष्टीने शिरकाव केलेला आहे. त्यांपैकी वराची घोड्यावरुन वरात काढणे, वाजंत्री, नाच-गाणे व ऑकेस्ट्रा या गोष्टींचा विवाह संस्काराशी काहीही संबंध नाही. या गोष्टी वेळखाऊ व पैसाखाऊ असून वैदिक विवाह संस्कार कार्यास बाधक आहेत. यामुळे एक तर विवाह दिलेल्या वेळेत होत नाही आणि दुसरी गोष्ट पुरोहिताला पुरेसा वेळही मिळत नाही. पुरोहिताला पुरेसा वेळ संस्कारासाठी मिळावा व विवाह दिलेल्या वेळेत सम्पन्न करण्याच्या दृष्टीने सर्व आर्य समाजीयांनी यावर अवश्य विचार करावा, एवढेच ...!

- आर्य समाज, सोलापूर
मो. ९८२२९९००११

वैदिक व्याख्यानमालेस राज्यात जोरदार प्रतिसाद

६० हून अधिक शाळा-महाविद्यालयात व्याख्याने

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेच्या वतीने थोर समाजसेविका स्व.शांतिदेवी मायर (लंडन) यांच्या स्मरणार्थ मानव निर्माण व सेवा सहायता समितीच्या वतीने राज्यभरात घेण्यात आलेल्या मानव निर्माण अभियान- वैदिक व्याख्यानमालेस जोरदार प्रतिसाद मिळाला. संपूर्ण डिसेंबर २०१५ महिनाभर वेदप्रचार वाहनाद्वारे ठिकठिकाणच्या शाळा - महाविद्यालये, वसतिगृहे, आश्रमशाळा आदी शिक्षण संस्थांमध्ये वैदिक विद्वानांची छात्रोपयोगी व्याख्याने, भजने, वैदिक ग्रंथांचे वितरण या माध्यमातून विद्यार्थी- विद्यार्थिनींमध्ये विचारांचा प्रसार करण्यात आला. या अभियानात व्याख्याने म्हणून वैदिक प्रवक्ते सर्वश्री पं. सुधारकजी शास्त्री (उपदेशक सभा), पं. ब्रिजेशजी शास्त्री (गाजियाबाद उ.प्र.) पं. नारायणराव कुलकर्णी (नांदेड), पं. लक्ष्मणराव आर्य गुरूजी (वेदप्रचार अधिष्ठाता, सभा), पं. आर्य मुनिजी (हदगांव), पं. प्रतापसिंहजी चौहान (भजनोपदेशक-सभा) यांनी मोलाची भूमिका बजावली. आर्यकार्यकर्ते, मुख्याध्यापक, शिक्षक, प्राचार्य, प्राध्यापक इ. नी या व्याख्यांनाचे आयोजन केले व भोजन व निवासाची व्यवस्था केली त्याबद्दल सभेतर्फे या सर्वांचे हार्दिक आभार

-राज्यात पार पडलेल्या व्याख्यानांचा कार्यक्रम-

दिनांक	शाळा व महाविद्यालये
१/१२/२०१५	१) जयप्रभा माध्य. विद्यालय, कुंबेफळ, ता. अंबाजोगाई २) जोगेश्वरी विद्यालय, अंबासाखर, अंबाजोगाई ३) संभाजीराव बडगीरे मा. उच्च माध्य. विद्यालय, ममदापुर
२/१२/२०१५	४) छत्रपती शिवाजी विद्यालय, आडस ता. केज ५) आर्य समाज, अंजनडोह, ता. किल्ले धारूर ६) ज्ञानदीप प्राथमिक विद्यालय, किल्ले धारूर
३/१२/२०१५	७) विद्याभवन हायस्कुल कळंब, जि. उस्मानाबाद
४/१२/२०१५	८) जनता विद्यालय, येडसी ता.जि. उस्मानाबाद
५/१२/२०१५	९) आने टेक्नो. स्कुल (I.I.T. Foundation) उस्मानाबाद १०) हनुमान मंदिर, पिंपरी ता. जि. उस्मानाबाद

६/१२/२०१५	११) आर्य समाज उस्मानाबाद- रविवारीय साप्ताहिक संत्सग
७/१२/२०१५	१२) गणेश विद्यालय, तेरखेडा ता. वाशी जि. उस्मानाबाद
८/१२/२०१५	१३) जि.प.केंद्रीय प्राथमिक शाळा, ईट ता. भूम १४) वीर भगतसिंह ॲकेडमी, ईट ता. भूम
९/१२/२०१५	१५) छत्रपती शिवाजी विद्यालय, वाशी १६) अजिंक्य उच्च प्राथ.विद्यामंदिर, वाशी १७) जगदाळे प्राथमिक विद्यामंदिर, वाशी
१०/१२/२०१५	१८) भेल सेकेंडरी स्कुल, परळी-वैजनाथ १९) चिंतामणी फाऊंडेशन स्कुल, परळी-वैजनाथ
११/१२/२०१५	२०) रत्नेश्वर विद्यालय, टोकवाडी ता. परळी-वैजनाथ २१) रामचंद्र विद्यालय, बोधेगांव, ता. परळी-वैजनाथ २२) संत तुकाराम विद्यालय, नागापूर ता. परळी-वैजनाथ
१२/१२/२०१५	२३) संत भगवानबाबा विद्यालय, नंदागौळ ता. परळी-वै. २४) जिल्हा परिषद हायस्कुल, पूस ता.अंबाजोगाई २५) जि. प. मा.शाळा, गिरवली ता. अंबाजोगाई
१३/१२/२०१५	२६) आर्य समाज, परळी-वै.-रविवारीय साप्ताहिक सत्संग २७) शासकीय निवासी शाळा, परळी-वै. २८) धुराबाई आश्रम शाळा, शंकर पार्वती नगर, परळी-वै.
१४/१२/२०१५	२९) भगतसिंह माध्य/उच्च माध्य विद्यालय, पळसी ता.रेणापूर
१५/१२/२०१५	३०) हु. वेदप्रकाश बलिदान समारंभ, गुंजोटी - सहभागी
१६/१२/२०१५	३१) आदर्श प्राथमिक विद्यालय, घाटनांदूर ता. अंबाजोगाई ३२) सोमेश्वर कन्या विद्यालय, घाटनांदूर ता. अंबाजोगाई ३३) म. होळकर मा. व उ.मा.विद्या. किनगांव ता.अहमदपूर
१७/१२/२०१५	३४) महात्मा फुले महाविद्यालय, अहमदपूर

१८/१२/२०१५	३५) शिवाजी विद्यालय, हाळी ता. उदगीर ३६) रूक्मिणीमाता माध्य. कन्या शाळा, हंडरगुळी तां.उदगीर ३८) अक्षरनंदन विद्यालय, नळेगांव रोड, उदगीर ३९) लोमेश्वर मा. व उच्च माध्यमिक विद्यालय, उदगीर
१९/१२/२०१५	४०) कृष्णामाता अनु. जाती व जमाती आश्रमशाळा, उदगीर ४१) कृष्णामाता बालगृह, आश्रमशाळा, उदगीर ४२) माणिकराव टोंपे – कौटुंबिक सत्संग, उदगीर
२०/१२/२०१५	४३) यशवंतराव चव्हाण विद्यालय, बोरूळ ता. देवणी
२२/१२/२०१५	४४) कर्मवीर भाऊराव पाटील विद्यालय, सावरी ता.निलंगा ४५) पं.वीरभद्रजी आर्य विद्यालय, औराद शहा. ता. निलंगा ४६) डॉ.शि. पाटील मा.व उ.मा. विद्यालय, हलगरा, ता.निलंगा
२३/१२/२०१५	४७) इंदिरा कन्या उच्च मा. विद्यालय, निलंगा ४८) डी. के. पाटील इं. स्कूल ४९) शिवाजी विद्यालय, निलंगा
२५/१२/२०१५	५०) इंद्रधनु वृद्धाश्रम व ५१) ज्येष्ठ नागरिक सत्संग उमरगा
२६/१२/२०१५	५२) महात्मा गांधी विद्यालय, उमरगा ५३) जि. प. शाळा, जकेकुरवाडी ता. उमरगा
२८/१२/२०१५	५४) जि.प.प्रा.शाळा, औराद ५५) श्रीकृष्ण विद्यालय, गुंजोटी
२९/१२/२०१५	५६) यशवंत विद्यालय, ५७) जिजामाता कन्या विद्यालय, ५८) न्यू व्हिजन नर्सिंग स्कूल ५९) इंदु गर्ल्स होस्टेल (सर्व लातूर)
३०/१२/२०१५	६०) महाराष्ट्र विद्यालय मजगे नगर, लातूर ६१) बंकटलाल लाहोटी इंग्लिश स्कूल, लातूर ६२) दयानंद विद्यालय, बाभळगांव ता.जि.लातूर
३१/१२/२०१५	६३) भगतसिंग मा. उच्च मा. विद्यालय, परळी–वै.

वरील व्याख्यानमालेसांठी खास गाजियाबाद (उ.प्र.) येथून सर्मपित विद्वान पं. ब्रीजेशजी शास्त्री आले त्याबद्दल सभा त्यांचे धन्यवाद व्यक्त करते.

'ते स्वामी दयानंद' आर्य समाजी नाहीत !

–प्राचार्य देवदत्त तुंगार

प्रजासत्ताक दिनी सर्व वृत्तपत्रात विविध क्षेत्रातील मान्यवर व्यक्तींना भारत सरकारने **'पद्म पुरस्कार'** घोषित केल्याचे वृत्त आले आहे. त्यात **स्वामी दयानंदांना पद्म पुरस्कार** जाहिर, असेही छापून आले. नांदेडसह इतर ठिकाणच्या अग्रगण्य दैनिकात व अन्य अनेक वृत्तपत्रात तर आर्य समाजाचे संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती यांना मरणोत्तर **'पद्मभूषण पुरस्कार'** दिल्याचे छायाचित्रासह प्रसिद्ध झाले आहे. या संदर्भात अनेकांनी आमच्याशी विचारणा केली. वृत्तपत्रामध्ये पंतप्रधान श्री नरेंद्र मोदी यांचे आध्यात्मिक गुरू स्वामी दयानंद असा उल्लख केल्याने आर्य समाजी कार्यकर्त्यांना व सभा पदाधिकाऱ्यांना देखील **'ते दयानंद'** आर्य समाजाचे **संस्थापक महर्षी दयानंदच** वाटले. पण ते दयानंद सरस्वती आर्य समाजाचे संस्थापक असलेले दयानंद नव्हेत, असा निःसंदिग्ध खुलासा आम्ही करू इच्छितो ! या संदर्भात आमच्या संपादकांनी अजमेरच्या परोपकारिणी सभेचे प्रधान डॉ. धर्मवीरजी यांचेशी संपर्क साधला असता त्यांनी पद्म पुरस्कार स्वामी दयानंद हे उत्तराखंड राज्यातील एक पौराणिक अद्वैती साधू असून त्यांनाच पंतप्रधान नरेंद्र मोदी हे आत्मत्मिक गुरू मानतात. ते वेदोद्धारक महर्षी स्वामी दयानंद सरस्वती नाहीत, असे स्पष्टीकरण दिले.

आर्य समाजाच्या महर्षी स्वामी दयानंद यांना **'भारतरत्न'** किंवा इतर कोणताही पुरस्कार देण्याची मागणी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधी सभा, हनुमान रोड, नवी दिल्ली या शिखर संस्थेने कधीही केली नाही. महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेचे प्रधान डॉ.प्रा.ब्रह्ममुनिजी यांनीही **'पुरस्कार प्राप्त दयानंद सरस्वती हे आर्य समाजी नाहीत'**, असा खुलासा आमच्याशी दुरध्वनीवरून बोलतांना केला आहे.

आर्य समाजाचे संस्थापक स्वामी दयानंद (१८२४ ते १८८३) हे आधुनिक काळातील कणाद, कपिल यांचे सारखे महान ऋषी होते व ते सामाजिक, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, लौकिक यशापयश याबद्दल पूर्णतः निरीच्छ व अलिप्त होते. महर्षी स्वामी दयानंद हे महात्मा फुले, लोकहितवादी देशमुख, न्यायमूर्ती रानडे यांचे समकालीन व समविचारी, पुरोगामी समाज सुधारक, धर्म सुधारक होते. **'भारतरत्न'** किंवा तत्सम कोणत्याही पुरस्कारापेक्षा दयानंदांचे **'स्वामी'** व **'महर्षी'** हे नामाभिधान श्रेष्ठ असल्याने त्यांना सरकारी पुरस्कार देऊन त्यांचे अवमूल्यन करू नये.

मान्यवर सामाजिक कार्यकर्ते, कलावंत आणि क्रीडापटू यांना प्रोत्साहन मिळावे व यांच्या कार्याचा सन्मान व्हावा, या हेतूने भारत सरकार पद्म पुरस्कार देण्यामागे व घेण्यामागे कांही प्रमाणात राजकारणही असतेच. तसे या पद्म पुरस्कार प्रदानातही वशिलेबाजी दिसतेच ! भूपृष्ठ वाहतूक मंत्री ना. गडकरी यांनी त्यांच्या घरी प्रसिद्ध सिनेअभिनेत्री आशा पारेख कशा आल्या होत्या व पद्म पुरस्कारासाठी त्यांनी कशी विनंती केली होती. याबद्दल जाहीर वक्तव्य केले आहे. यंदा श्री अनुपम खेर यांना पद्म पुरस्कार मिळाला. त्याचे कारण त्यांनी पंतप्रधान नरेंद्र मोदी यांचे स्तुतिगान गायले. अशी टीका सिनेक्षेत्रातील प्रख्यात संवाद लेखक कादरखान यांनी केली आहे.

आर्य समाजाचे संस्थापक महर्षी स्वामी दयानंद सरस्वती हे प्रखर विचारवंत-कर्मयोगी होते. त्यांना कोणत्याही प्रतिष्ठेची व मान-सन्मानाची अपेक्षा नव्हती. ते या सर्व लौकिक मान - मान्यतेच्या पलिकडे गेलेले, महान योगी, वेदोद्धारक व श्रद्धेय असे व्यक्तिमत्व होते. त्यांना **'भारतरत्न'** किंवा तत्सम सन्मान द्यावा, अशी कोणीही मागणी केलेली नाही. कारण अशा सर्व मान-सन्मान पुरस्कार याच्या ते पलिकडे गेले आहेत. येथे महर्षी स्वामी दयानंद सरस्वती यांचा त्रोटक परिचय करून द्यायचा म्हणजे, ते महात्मा फुले यांचे समकालीन मित्र होते. लोकहितवादी शतपत्रे लिहिणारे पत्रकार व न्यायाधीश गोपाळ हरि देशमुख हे त्यांचे परमभक्त होते. न्यायमूर्ती **सर्वज्ञ माधव** असा लोकमान्य टिळकांनी ज्यांचा गौरव केला, ते महादेव गोविंद रानडे हेही दयानंदांचे चाहते होते. रानडे आणि महात्मा फुले यांनी दयानंदांची पुणे येथे प्रचंड मिरवणूक काढून त्यांचा सत्कार केला. आचार्य अत्रे यांनी हा प्रसंग 'महात्मा फुले' या चित्रपटात चित्रित केला आहे. एकोणिसाव्या शतकातील महान ऋषी असा गौरव महात्मा गांधी, सुभाषचंद्र बोस, न्यायमूर्ती देशमुख आदींनी केला आहे.

- निरामय, कला मंदिरामागे, नांदेड
मो. ९३७२५४१७७७

संरक्षक की आवश्यकता

आर्य समाज,परली वैजनाथ द्वारा संचालित श्रद्धानन्द गुरूकुल आश्रम, नन्दगौल मार्ग, परली में सुयोग्य संरक्षक की आवश्यकता है । गुरूकुलों के शास्त्री उत्तीर्ण/अनुत्तीर्ण रहे, एक ऐसे आर्ययुवक जो कि छात्रों को अनुशासनपूर्वक नियंत्रण में रख सके तथा पूरी तरह से दिनचर्या आदि सम्भालने में सक्षम हो । ऐसे इच्छुक स्नातक गुरूकुल परली से शीघ्र ही सम्पर्क करें । **- मंत्री, आर्य समाज परली**

वार्ता विशेष *लातूर, निलंगा व औराद (श.) येथे सभेतर्फे आयोजित*

क्रियात्मक ध्यानयोग शिबिरांना उत्तम प्रतिसाद

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेतर्फे यावर्षी लातूर (रामनगर), निलंगा व औराद (शहाजानी) येथे घेण्यात आलेल्या क्रियात्मक ध्यान योग शिबिरांना उत्स्फूर्त प्रतिसाद मिळाला. प्रसिद्ध योगप्रसारक पू. स्वामी अमृतानन्दजी सरस्वती (जमानी आश्रम, इटारसी-म.प्र.) यांच्या मार्गदर्शनाखाली अनेक योगप्रेमी स्त्री-पुरूषांनी, युवक व विद्यार्थ्यांनी योगासन व प्राणायामासोबतच आत्मसाधनेचे प्रशिक्षण घेतले. तिन्ही ठिकाणच्या शिबिरांमध्ये स्वामीजींनी योगाच्या यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान व समाधी या आठ अंगांचे विस्तृत विवेचन करीत ईश्वर, आत्मा, सृष्टिविज्ञान या तीन आध्यात्मिक तत्वांवर सखोल प्रकाश टाकला. आपल्या प्रवचनातून त्यांनी 'मानवाचा जन्म हा ईश्वरप्राप्तीसाठी झाला असून मन व इन्द्रियांचे दमन करीत आत्मसाधना वाढविणे गरजेचे आहे. साध्य, साधन व साधक यांचे स्वरूप, संबंध व महत्व जाणल्यास मानव सर्वदृष्टीने सुखी व आनंदी होतो,' असे प्रतिपादन केले.

दि. १७ जानेवारी पासून रामनगर (लातूर) आर्य समाजात सुरू झालेल्या शिबिरात जवळपास ५० साधकांनी भाग घेतला. सांगता समारंभ दि. २४ जानेवारी रोजी पार पडला. यावेळी प्रधान श्री शंकरराव मोरे व सभेचे उपप्रधान श्री राजेंद्र दिवे यांच्या हस्ते स्वामीजींचा सत्कार करण्यात आला. कार्यक्रमाचे सूत्रसंचालन व आभार मंत्री ज्ञानकुमार आर्य यांनी मानले.

दि. २५ ते ३१ जानेवारी दरम्यान निलंगा येथील आर्य समाजात आयोजित योग शिबिरात २५ ते ३० योगप्रेमीनी भाग घेतला. दररोज पहाटे ५.३० ते ६.३० वा. योगासन व प्राणायाम मंत्री अमित शाहीर व व्यायामाचार्य सूरज हदवे यांनी शिकविले, तर ६.३० ते ८.३० वा. या वेळेत स्वामीजींनी ध्यान योगाचे प्रशिक्षण दिले. रात्रौ ८ ते ९ वा. दरम्यान महत्वूपर्ण आध्यात्मिक विषयांवर व्याख्यान होत असे. याचबरोबर शहरातील डी.वाय. पाटील विद्यालयात देखील स्वामीजीच्या व्याख्यानाचा कार्यक्रम पार पडला. समापन समारंभाच्या अध्यक्षखाली डॉ.कुडुंबले हे होते. याप्रसंगी श्री प्रल्हाद बाहेती, श्री अनंतराव पाटील, श्रीमती शांताबाई शाहीर यांनी शिबिरकालीन अनुभव व्यक्त केले. संचालन मंत्री अजित शाहीर यांनी केले.

औराद (श.) येथील आर्य समाजात दि. १ ते ७ फेब्रुवारी या काळात

योग शिबिर पार पडले. यात ४० ते ५० योगप्रेमींनी भाग घेतला. समापन सत्राच्या अध्यक्षस्थानी श्री काशिनाथराव सज्जनसेठी होते. याप्रसंगी हनुमंत लांडगे, काशिनाथराव हुमनाबादे यांनी मनोगत व्यक्त केले. प्रास्ताविक, सुत्रसंचलन व आभार प्रदर्शन डॉ. प्रकाश कच्छवा यांनी केले. योगप्रशिक्षक पू.स्वामी अमृतानंदजी व तिन्ही आयोजक आर्य समाजांचे प्रांतीय सभेच्या वतीन हार्दिक धन्यवाद...!

शोक वार्ता गोविंदराव वाडकर यांचे देहावसान

रामेगांव (ता.औसा जि. लातूर) येथील आर्य समाजाचे मंत्री श्री गोविंदराव वाडकर यांचे दि. १८ नोव्हेंबर २०१५ रोजी वृद्धापकाळाने दुःखद निधन झाले. ते ८० वर्षांचे होते. त्यांच्या मागे एक मुलगा, चार मुली, सुन,जावई व नातवंडे असा परिवार आहे. आर्य समाजाच्या प्रचार व प्रसार कार्यात त्यांनी मोठी भूमिका बजावली होती. गावात दरवर्षी श्रावणी वेदप्रचार करण्यासाठी ते प्रयत्नशील राहत. क्रियाशील आर्य समाजी, कष्टकरी शेतकरी व किराणा व्यापारी म्हणून त्यांची ओळख होती.

त्यांच्या पार्थिवावर मोगरगा येथील पुरोहित पं. शिवाजीराव निकम यांच्या पौरोहित्याखाली पूर्ण वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले.

ज्ञानोबाराव पवार यांचे निधन

घटांग्रा (ता.गंगाखेड जि. परभणी) येथील आर्य समाजाचे संस्थापक सदस्य व वयोवृद्ध आर्य कार्यकर्ते श्री ज्ञानोबाराव पवार यांचे दि. १० डिसेंबर २०१५ सकाळी ११.३० वा. च्या सुमारास वार्धक्याने निधन झाले. मृत्युसमयी ते ९५ वर्षांचे होते. त्यांच्या मागे पुत्र माणिक, सुन, कन्या कांताबाई, पुतणे शिवराज असा परिवार आहे.

श्री पवार यांनी इ. स. १९५६ साली स्थापन झालेल्या घटांग्रा आर्य समाजाच्या उभारणीत बहुमोल योगदान दिले होते. ते अत्यंत मनमिळावू, शांत व धैर्यवृत्ती धारण करणारे सद्गृहस्थ होते. श्री संभाजीराव पवार यांच्या समवेत परळी, लातूर व इतर ठिकाणी संपन्न झालेल्या उत्सव, सभा, सम्मेलने, बैठका इत्यादींमध्ये त्यांनी उत्साहाने भाग घेतला होता.

त्यांच्या पार्थिवावर वैदिक पद्धतीने अंतिम संस्कार करण्यात आले. स्वामी सम्यक् क्रांतिवेश व जनार्दन पवार गुरूजी यांच्या पौरोहित्याखाली पार पडलेल्या या अंत्येष्टी संस्कारात स्व.पवार यांचे सुपुत्र श्री माणिकराव यांनी मुखाग्नी दिला. यावेळी दोन हजारापेक्षा जास्त लोक उपस्थित होते.

अजमेर के ऋषिमेले पर **पाखण्ड खण्डन सम्मेलन** में विचार रखते हुए डॉ.नयनकुमार आचार्य । साथ में मंच पर हैं आचार्य सत्यानन्दजी वेदवागीश आदि ।

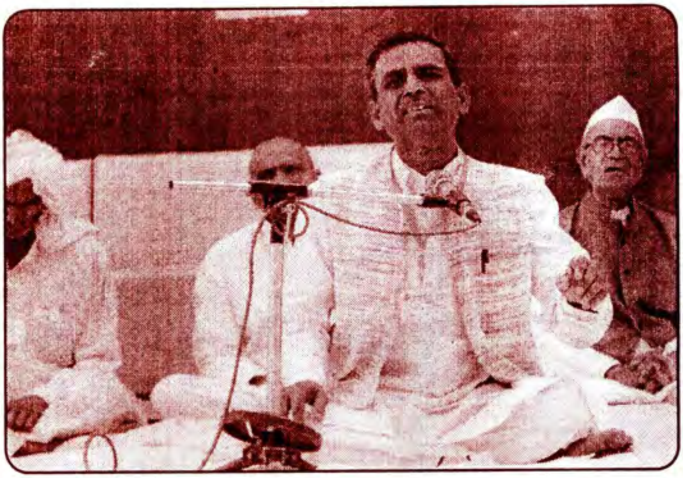

ऋषिनिर्वाण दिवस, परली में मार्गदर्शन करते हुए प्रा.डॉ.नरेंद्रजी शास्त्री । मंच पर हैं सर्वश्री उग्रसेन राठौर, जुगलकिशोर लोहिया, भागवतराव आघाव व सौ. आघाव ।

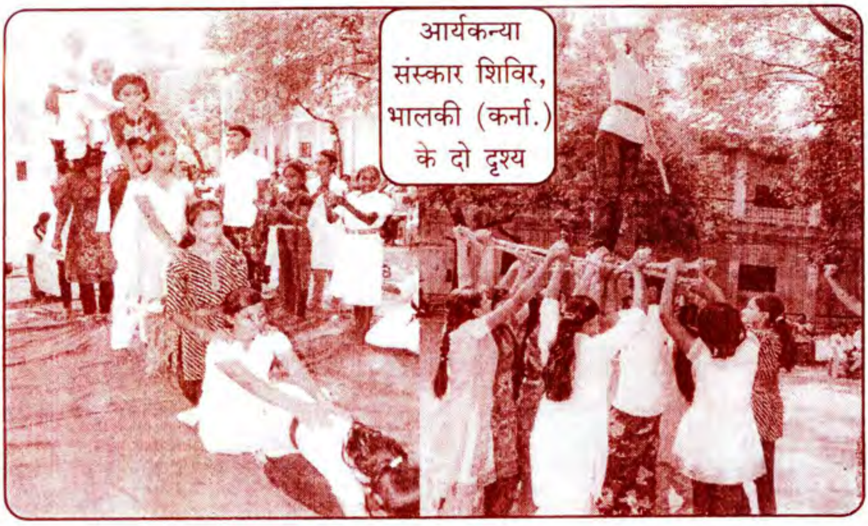

आर्यकन्या संस्कार शिविर, भालकी (कर्ना.) के दो दृश्य

REG.No. MAHBIL/2007/7493 ★ Postal No. L/Beed/18/20

सेवा में,
श्री

प्रेषक -
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
आर्य समाज, परली वैजनाथ.
पिन ४३१ ५१५ जि.बीड. (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वै
स्थलपर मुद्रित कर 'महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा' कार्यालय 'आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१ ५१५ जि.बीड (
इस स्थान से प्रकाशित किया।

जीवेत् शरदः शतम्।

परोपकार, समाजसेवा, वेदप्रचार, शिक्षाप्रसार तथा नागपुर शहर व विदर्भ
आर्य समाज की गतिविधियों को बढाने में कार्यतत्पर आदर्श आर्य

श्री.पं.सुरेन्द्रपालजी आ
(प्रसिध्द भजनोपदेशक व गीतकार, नागपुर)

सौ.करुणादेवी आर्या
(अवकाशप्राप्त मुख्याध्यापिका, मन्त्राणी, महिला आर्य समाज, जरीपटका, ना

के गौरव में 'वैदिक गर्जना' मासिक का रंगीन मुखपृष्ठ सम